सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 132, नई दिल्ली, सोमवार 21 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 क्रॉम्पटन ने एमियो फ्रेश न्यूट्री ब्लेंडर लॉन्च किया

06 बच्चा होने का समय नहीं: स्कूली बच्चों के अतिभारित जीवन के अंदर

08 पीस पार्टी दिल्ली प्रदेश यूथ विंग का गठन

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (उफ्तत्सा) भारत में परिवहन क्षेत्र में ट्रक मालिकों, ट्रांसपोर्टरों और ड्राइवरों की समस्याएं

कौन सुने फरियाद- सभी राजनैतिक दल अपनी रोटियां सेंकने व वोट बैंक साधने में व्यस्त

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत का परिवहन क्षेत्र, विशेष रूप से सड़क परिवहन, देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, जिसमें ट्रक मालिक, ट्रांसपोर्टर और ड्राइवर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह क्षेत्र माल ढुलाई के लिए 60% से अधिक योगदान देता है, लेकिन इसके बावजूद यह कई समस्याओं, घोटालों और अनियमितताओं से जूझ रहा है। रविंद्र बधानी राष्ट्रीय प्रभारी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के अनुसार ट्रक मालिकों, ट्रांसपोर्टरों और ड्राइवरों से संबंधित चुनौतियों और अनियमितताओं पर केंद्रित है, जो राष्ट्रीय स्तर पर परिवहन क्षेत्र की दक्षता और विश्वसनीयता को प्रभावित कर रही हैं। ट्रक मालिकों, ट्रांसपोर्टरों और ड्राइवरों की प्रमुख समस्याएँ में झकझोरने वाली

हिट-एंड-रन कानून के प्रति असंतोषः भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 104(1) और 104(2) के तहत हिट-एंड-रन मामलों में सजा को 10 साल तक बढ़ाने और भारी जुर्माने के प्रावधान के खिलाफ ट्रक ड्राइवरों और ट्रांसपोर्टरों में भारी असंतोष है।राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ने पंजाब से बिगुल फूँककर 2024 में इस कानून के विरोध में देशव्यापी हड़ताल कर आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित किया, जिसके बाद सरकार ने इसे लागू न करने का आश्वासन तो दिया लेकिन यु टर्न ले लिया जिसमे देश के तथाकथित बड़े संगठन परिवहन उद्योग के लिए किये अपने क्रियाककलापों से पूर्णतः बदनाम हुई, वैसे अपनी कार्यशैली से तथाकथित बड़ी स्वयंभू संस्था पहले भी कई मौकों पर अपनी फजीहत करा चुकी है 1उच्च परिचालन लागत में डीजल, टायर, बैटरी व अन्य कल पुरजों की बढ़ती कीमतें, टोल शुल्क, और 36 प्रकार के करों का बोझ ट्रक मालिकों और ट्रांसपोर्टरों पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त, सड़कों की लगातार खराब होती स्थिति और रखरखाव की कमी से वाहनों की मरम्मत लागत बढ़ती है।

राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश अग्रवाल (महाराष्ट्र) के अनुसार - सड़क सुरक्षा और प्रशिक्षण की कमी सरदर्द का कारण : ड्राइवरों को अपर्याप्त प्रशिक्षण और सड़क सुरक्षा उपायों की कमी के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ रही हैं। मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार, 2023 में प्रतिदिन 474 सड़क दुर्घटना मृत्यु दर्ज की गईं, जिनमें से कई ट्रक ड्राइवरों से संबंधित थीं। वहीं अवैध दबाव और उत्पीड़न से ट्रक ड्राइवरों और ट्रांसपोर्टरों को स्थानीय प्रशासन, पुलिस और खनन माफिया द्वारा अवैध वसूली का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश में ट्रक मालिकों पर बैरियर पर हंगामे का आरोप लगाकर 25 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी के प्रभात शाह के अनुसार ₹काम के असुरक्षित हालात भारी परेशानी का सबब - ड्राइवरों को लंबे समय तक काम करने, अपर्याप्त विश्राम और खराब सड़क सुविधाओं का सामना करना पड़ता है। राष्ट्रीय राजमार्गों पर केवल 600 स्थानों पर वेसाइड सुविधाएँ विकसित करने की योजना है, जो अभी प्रारंभिक चरण में ही है।

उफ्तत्सा के सरदार हरदीप सिँह जी वढेरा (करनाल) के अनुसार -₹घोटाले और अनियमितताएँ

परिवहन विभाग में भ्रष्टाचार आत्महत्या के कगार पर ला ख़डी करती है -उदाहरण स्वरूप ₹मध्य प्रदेश में परिवहन घोटाले में पूर्व आरटीओ कांस्टेबल सौरभ शर्मा के ठिकानों से 52 किलो सोना और 11 करोड़ रुपये नकद बरामद हुए, जो अवैध वसूली का प्रमाण है।₹

राधेश्याम मलिक (हरियाणा) ने कहा - ₹प्रशिक्षण घोटाला भी नायाब उदाहरण है - वैसे तो कमोबेश सभी राज्यों में यह आदतानुसार है किन्तु -उत्तर प्रदेश सड़क परिवहन निगम में प्रशिक्षण घोटाले की शिकायतें सामने आई हैं, जहाँ ड्राइवरों को सात दिन के प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है, लेकिन केवल पाँच दिन का भुगतान किया जाता है। शेष राशि अधिकारियों द्वारा हड़प ली जाती है।₹

सतकुँवार गर्ग (हरियाणा) के अनुसार - अवैध परिवहन और जब्ती अंग्रेज शासन से भी बुरे उदाहरण प्रस्तुत करती है - कई मामलों में ट्रक जब्ती और भारी जुर्माने की घटनाएँ ट्रक मालिकों के लिए आर्थिक बोझ बढ़ाती हैं।बेवजह झारखण्ड में राजसात व सम्पूर्ण भारत में बेवजह ज़ब्ती व तदोपरान्त नई नई गाड़ियों को सड़ा देना बहुत ही दुःखद है1

रणवीर सिँह (दिल्ली) के अनुसार फर्जी दस्तावेज और धोखाधड़ी पर कार्रवाई शून्य होना सरकारी तंत्र के निष्क्रियता का प्रमाण है - वाहन पंजीकरण में फर्जी दस्तावेजों का उपयोग और हाइपोथिकेशन हटाने में धोखाधड़ी की शिकायतें आम हैं। दिल्ली में एक मामले में डीलर ने हाइपोथिकेशन नहीं हटाया, जिससे मालिक को कानूनी परेशानी हुई।किसी के नम्बर प्लेट लगा धोखाधड़ी रोकने में सरकार पूर्णतया विफल1

राष्ट्रीय कार्यकारिणी के अभिषेक साहू के अनुसार खनन और परिवहन में भ्रष्टाचार का सिरा सीधे उच्च स्तरीय बाबुओं तक है- सोनभद्र में खनन अधिकारियों की शिकायत पर ट्रक मालिकों और संगठनों पर मुकदमे दर्ज किए गए, जो अवैध खनन परिवहन से जुड़े हैं। यह स्थानीय प्रशासन और माफिया की मिलीभगत को दर्शाता है।

अजय सिंगला (पंजाब)- केंद्र सरकार और तथाकथित संगठन के प्रयास से हड़ताल जबरन तोड़ा गया- 2024 में गृह मंत्रालय ने ट्रक ड्राइवरों के बजाए कुछ ट्रांसपोर्टरों के साथ बातचीत कर हिट-एंड-रन कानून को लागू न करने का आश्वासन दिया, जिससे उड़ी अफवाहों ने राष्ट्रव्यापी हड़ताल की कमर तोड़ दी

नरेश बंसल (महाराष्ट्र) के अनुसार राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा व अन्य संगठनों के मांग पर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने 22 राज्यों में 600 से अधिक स्थानों पर वेसाइड सुविधाएँ विकसित करने की योजना बनाई है जो निश्चय ही स्वागतोग्य है, जिसमें इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन भी शामिल हैं। वहीं प्रशिक्षण और सड़क सुरक्षा हेतु सड़क परिवहन मंत्रालय ने सड़क सुरक्षा के लिए चार ई (शिक्षा, प्रवर्तन, इंजीनियरिंग, आपातकालीन देखभाल) पर कार्य समूह गठित किए हैं।

राम मेहर शर्मा (ओड़िशा) के अनुसार - कानूनी कार्रवाई के तहत परिवहन घोटालों की जाँच के लिए सीबीआई और लोकायुक्त सक्रिय हैं। मध्य प्रदेश में परिवहन घोटाले की जाँच के लिए कुछ संगठनों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करने की घोषणा की है।

अविराज राय (झारखण्ड) के अनुसार - सड़कों पर चालान के बजाए - वाहन पंजीकरण, टोल भुगतान और परमिट प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल और पारदर्शी बनाया जाए।व सुरक्षा और प्रशिक्षण के तहत- ड्राइवरों के लिए अनिवार्य और मुफ्त प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाएँ, विशेष रूप से सड़क सुरक्षा और नए कानूनों के बारे में।

राजकुमार यादव राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के अनुसार कानूनी सहायता के रूप में ट्रक मालिकों और ड्राइवरों के लिए मुफ्त कानूनी सहायता केंद्र स्थापित किए जाएँ, ताकि वे धोखाधड़ी और उत्पीड़न से बच सकें।वहीं करों में राहत के अन्तर्गत टोल शुल्क और जीएसटी करों में एकरूपता लाकर ट्रक मालिकों पर आर्थिक बोझ कम किया जाए। ड्राइवरों के लिए विश्राम स्थल, चिकित्सा सुविधाएँ और भोजन की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

इसके साथ ही ट्रक मालिक, ट्रांसपोर्टर और ड्राइवर परिवहन क्षेत्र की रीढ़ हैं, लेकिन भ्रष्टाचार, अनियमितताएँ और नीतिगत कमियाँ उनकी आजीविका को प्रभावित कर रही हैं। सरकार को पारदर्शी नीतियाँ, तकनीकी नवाचार और सख्त निगरानी के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान करना होगा। साथ ही, ट्रक मालिकों और ड्राइवर संगठनों को सच्चे मन से एकजुट हो अपनी माँगों को संगठित रूप से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, ताकि यह क्षेत्र अधिक सुरक्षित, दक्ष, सम्मानजनक और लाभकारी बन सके।

9 सितम्बर 2025 को होने वाली विशाल भारत महा ईवी रैली को लेकर की मुलाकातें

केंद्रीय रेल और जल शक्ति राज्य मंत्री ने पुरी रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की समीक्षा की

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : केंद्रीय रेल एवं जल शक्ति राज्य मंत्री वी. सोमन्ना ने अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत पुरी रेलवे स्टेशन पर किए जा रहे पुनर्विकास कार्य का निरीक्षण किया।उन्होंने रेलवे के बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया और कहा कि ओडिशा को 2025 के रेल बजट में 10,599 करोड़ रुपये मिले हैं - जो 2009-14 की तुलना में 12.5 गुना वृद्धि है।वर्तमान में, राज्य में 59 स्टेशनों का 2,379 करोड़ रुपये की लागत से पुनर्विकास किया जा रहा है और राज्य में 80,000 करोड़ रुपये से अधिक की रेलवे परियोजनाएँ चल रही हैं। श्री सोमन्ना ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पिछले एक दशक में, इस क्षेत्र में रेलवे के बुनियादी ढाँचे में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिसमें नई रेलवे लाइनों के निर्माण, पटरियों के दोहरीकरण और यात्री सुविधाओं में वृद्धि में उल्लेखनीय प्रगति हुई है - जो पिछले वर्षों की प्रगति से कहीं अधिक है। उन्होंने ₹वंदे भारत एक्सप्रेस₹ जैसी आधुनिक ट्रेनों की शुरुआत का भी उल्लेख किया और कहा कि अब वंदे भारत एक्सप्रेस ओडिशा के प्रमुख हिस्सों को जोड़ती है और क्षेत्रीय संपर्क और विकास को और बढ़ाती है। रेल राज्य मंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पुनर्निर्मित पुरी स्टेशन पर स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए 'एक स्टेशन एक उत्पाद' स्टॉल उपलब्ध कराए जाएँगे और बेहतर पहुँच, आधुनिक प्रतीक्षालय, लिफ्ट/एस्केलेटर, कार्यकारी लाउंज, स्थानीय सुविधाएँ और कियोस्क सहित विश्व स्तरीय सुविधाएँ प्रदान की जाएँगी।

स्त्रियों के 16 श्रृंगार एवं उसका महत्व-

हिन्दू महिलाओं के लिए 16 श्रृंगार का विशेष महत्व है। विवाह के बाद स्त्री इन सभी चीजों को अनिवार्य रूप से धारण करती है। हर एक चीज का अलग महत्व है। हर स्त्री चाहती थी की वे सज धज कर सुन्दर लगे यह उनके रूप को ओर भी अधिक सौन्दर्यवान बना देता है।

यहां 16 श्रृंगार के बार मे विस्तृत वर्णन किया गया है।

पहला श्रृंगारः-- बिंदी----

संस्कृत भाषा के बिंदु शब्द से बिंदी की उत्पत्ति हुई है। भवों के बीच रंग या कुमकुम से लगाई जाने वाली भगवान शिव के तीसरे नेत्र का प्रतीक मानी जाती है। सुहागिन स्त्रियां कुमकुम या सिंदूर से अपने ललाट पर लाल बिंदी लगाना जरूरी समझती हैं। इसे परिवार की समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

धार्मिक मान्यता----

बिंदी को त्रिनेत्र का प्रतीक माना गया है. दो नेत्रों को सूर्य व चंद्रमा माना गया है, जो वर्तमान व भूतकाल देखते हैं तथा बिंदी त्रिनेत्र के प्रतीक के रूप में भविष्य में आनेवाले संकेतों की ओर इशारा करती है।

वैज्ञानिक मान्यता----

विज्ञान के अनुसार, बिंदी लगाने से महिला का आज्ञा चक्र सक्रिय हो जाता है. यह महिला को आध्यात्मिक बने रहने में तथा आध्यात्मिक ऊर्जा को बनाए रखने में सहायक होता है. बिंदी आज्ञा चक्र को संतुलित कर दुल्हन को ऊर्जावान बनाए रखने में सहायक होती है।

दूसरा श्रृंगारः सिंदूर----

उत्तर भारत में लगभग सभी प्रांतों में सिंदूर को स्त्रियों का सुहाग चिन्ह माना जाता है और विवाह के अवसर पर पति अपनी पत्नी के मांग में सिंदूर भर कर जीवन भर उसका साथ निभाने का वचन देता है।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, सौभाग्यवती महिला अपने पति की लंबी उम्र के लिए मांग में सिंदूर भरती है. लाल सिंदूर महिला के सहस्रचक्र को सक्रिय रखता है. यह महिला के मस्तिष्क को एकाग्र कर उसे सही सूझबूझ देता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, सिंदूर महिलाओं के रक्तचाप को नियंत्रित करता है. सिंदूर महिला के शारीरिक तापमान को नियंत्रित कर उसे ठंडक देता है और शांत रखता है।

तीसरा श्रृंगारः काजल----

काजल आँखों का श्रृंगार है. इससे आँखों की सुन्दरता तो बढ़ती ही है, काजल दुल्हन और उसके परिवार को लोगों की बुरी नजर से भी बचाता है।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, काजल लगाने से स्त्री पर किसी की बुरी नज़र का कुप्रभाव नहीं पड़ता. काजल से आंखों से संबंधित कई रोगों से बचाव होता है. काजल से भरी आंखें स्त्री के हृदय के प्यार व कोमलता को दर्शाती हैं।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, काजल आंखों को ठंडक देता है. आंखों में काजल लगाने से नुक़सानदायक सूर्य की किरणों व धूल-मिट्टी से आंखों का बचाव होता है।

चौथा श्रृंगारः मेहंदी----

मेहंदी के बिना सुहागन का श्रृंगार अधूरा माना जाता है। शादी के वक्त दुल्हन और शादी में शामिल होने वाली परिवार की सुहागिन स्त्रियां अपने पैरों और हाथों में

मेहंदी रचाती है। ऐसा माना जाता है कि नववधू के हाथों में मेहंदी जितनी गाढ़ी रचती है, उसका पति उसे उतना ही ज्यादा प्यार करता है।

धार्मिक मान्यता----

मानयताओं के अनुसार, मेहंदी का गहरा रंग पति-पत्नी के बीच के गहरे प्रेम से संबंध रखता है. मेहंदी का रंग जितना लाल और गहरा होता है, पति-पत्नी के बीच प्रेम उतना ही गहरा होता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार मेहंदी दुल्हन को तनाव से दूर रहने में सहायता करती है. मेहंदी की ठंडक और ख़ुशबू दुल्हन को ख़ुश व ऊर्जावान बनाए रखती है।

पांचवां श्रृंगारः शादी का जोड़ा----

उत्तर भारत में आम तौर से शादी के वक्त दुल्हन को जरी के काम से सुसज्जित शादी का लाल जोड़ा (घाघरा, चोली और ओढ़नी) पहनाया जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में फेरों के वक्त दुल्हन को पीले और लाल रंग की साड़ी पहनाई जाती है। इसी तरह महाराष्ट्र में हरा रंग शुभ माना जाता है और वहां शादी के वक्त दुल्हन हरे रंग की साड़ी मराठी शैली में बांधती हैं।

धार्मिक मान्यता----

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, लाल रंग शुभ, मंगल व सौभाग्य का प्रतीक है, इसीलिए शुभ कार्यों में लाल रंग का सिंदूर, कुमकुम, शादी का जोड़ा आदि का प्रयोग किया जाता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

विज्ञान के अनुसार, लाल रंग शक्तिशाली व प्रभावशाली है, इसके उपयोग से एकाग्रता बनी रहती है. लाल रंग आपकी भावनाओं को नियंत्रित कर आपको स्थिरता देता है।

छठा श्रृंगारः गजरा----

दुल्हन के जूड़े में जब तक सुगंधित फूलों का गजरा न लगा हो तब तक उसका श्रृंगार फीका सा लगता है। दक्षिण भारत में तो सुहागिन स्त्रियां प्रतिदिन अपने बालों में हरसिंगार के फूलों का गजरा लगाती है।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, गजरा दुल्हन को धैर्य व ताज़गी देता है. शादी के समय दुल्हन के मन में कई तरह के विचार आते हैं, गजरा उन्हीं विचारों से उसे दूर रखता है और ताज़गी देता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

विज्ञान के अनुसार, चमेली के फूलों की महक हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है. चमेली की ख़ुशबू तनाव को दूर करने में सबसे ज़्यादा सहायक होती है।

सातवां श्रृंगारः मांग टीका----

मांग के बीचों-बीच पहना जाने वाला यह स्वर्ण आभूषण सिंदूर के साथ मिलकर वधू की सुंदरता में चार चांद लगा देता है। ऐसी मान्यता है कि नववधू को मांग टीका सिर के ठीक बीचों-बीच इसलिए पहनाया जाता है कि वह शादी के बाद हमेशा अपने जीवन में सही और सीधे रास्ते पर चले और वह बिना किसी पक्षपात के सही निर्णय ले सके।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, मांगटीका महिला के यश व सौभाग्य का प्रतीक है. मांगटीका यह दर्शाता है कि महिला को अपने से जुड़े लोगों का हमेशा आदर करना है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार मांगटीका महिलाओं के शारीरिक तापमान को नियंत्रित करता है, जिससे उनकी सूझबूझ व निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

आठवां श्रृंगारः नथ----

विवाह के अवसर पर पवित्र अग्नि में चारों ओर सात फेरे लेने के बाद देवी पार्वती के सम्मान में नववधू को नथ पहनाई जाती है। ऐसी मान्यता है कि सुहागिन स्त्री के नथ पहनने से पति के स्वास्थ्य और धन-धान्य में वृद्धि होती है। उत्तर भारतीय स्त्रियां आमतौर पर नाक के बायीं ओर ही आभूषण पहनती है, जबकि दक्षिण भारत में नाक के दोनों ओर नाक के बीच के हिस्से में भी छोटी-सी नोज रिंग पहनी जाती है, जिसे बुलाक कहा जाता है। नथ आकार में काफी बड़ी होती है इसे हमेशा पहने रहना असुविधाजनक होता है, इसलिए सुहागन स्त्रियां इसे शादी-व्याह और तीज-त्यौहार जैसे खास अवसरों पर ही पहनती हैं, लेकिन सुहागिन स्त्रियों के लिए नाक में आभूषण पहनना अनिर्वाय माना जाता है। इसलिए आम तौर पर स्त्रियां नाक में छोटी

नोजपिन पहनती हैं, जो देखने में लौंग की आकार का होता है। इसलिए इसे लौंग भी कहा जाता है।

धार्मिक मान्यता----

हिंदू धर्म में जिस महिला का पति मृत्युथ को प्राप्त हो जाता है, उसकी नथ को उतार दिया जाता है। इसके अलावा हिंदू धर्म के अनुसार नथ को माता पार्वती को सम्मान देने के लिये भी पहना जाता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

जिस प्रकार शरीर के अलग-अलग हिस्सों को दबाने से एक्यूप्रेशर का लाभ मिलता है, ठीक उसी प्रकार नाक छिदवाने से एक्यूपंक्चर का लाभ मिलता है। इसके प्रभाव से श्वास संबंधी रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ती है। कफ, सर्दी-जुकाम आदि रोगों में भी इससे लाभ मिलते हैं। आयुर्वेद के अनुसार नाक के एक प्रमुख हिस्से पर छेद करने से स्त्रियों को मासिक धर्म से जुड़ी कई परेशानियों में राहत मिल सकती है। आमतौर पर लड़कियां सोने या चांदी से बनी नथ पहनती हैं। ये धातुएं लगातार हमारे शरीर के संपर्क में रहती हैं तो इनके गुण हमें प्राप्त होते हैं। आयुर्वेद में स्वर्ण भस्म और रजत भस्म बहुत सी बीमारियों में दवा का काम करती है।

नौवां श्रृंगारः कर्णफूल----

कान में पहने जाने वाला यह आभूषण कई तरह की सुंदर आकृतियों में होता है, जिसे चेन के सहारे जुड़े में बांधा जाता है। विवाह के बाद स्त्रियों का कानों में कणर्फूल (ईयरिंग्स) पहनना जरूरी समझा जाता है। इसके पीछे ऐसी मान्यता है कि विवाह के बाद बहू को दूसरों की, खासतौर से पति और ससुराल वालों की बुराई करने और सुनने से दूर रहना चाहिए।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, कर्णफूल यानी ईयररिंग्स महिला के स्वास्थ्य से सीधा संबंध रखते हैं. ये महिला के चेहरे की ख़ूबसूरती को निखारते हैं. इसके बिना महिला का श्रृंगार अधूरा रहता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार हमारे कर्णपाली (ईयरलोब) पर बहुत से एक्यूपंक्चर व एक्यूप्रेशर पॉइंट्स होते हैं, जिन पर सही दबाव दिया जाए, तो माहवारी के दिनों में होनेवाले दर्द से राहत मिलती है. ईयररिंग्स उन्हीं प्रेशर पॉइंट्स पर दबाव डालते हैं. साथ ही ये किडनी और मूत्राशय (ब्लैडर) को भी स्वस्थ बनाए रखते हैं।

दसवां श्रृंगारः हार या मंगल सूत्र----

गले में पहना जाने वाला सोने या मोतियों का हार पति के प्रति सुहागन स्त्री के वचनबद्धता का प्रतीक माना जाता है। हार पहनने के पीछे स्वास्थ्यगत कारण हैं। गले और इसके आस-पास के क्षेत्रों में कुछ दबाव बिंदु ऐसे होते हैं जिनसे शरीर के कई हिस्सों को लाभ पहुंचता है। इसी हार को सौंदर्य का रूप दे दिया गया है और श्रृंगार का अभिन्न अंग बना दिया है। दक्षिण और पश्चिम भारत के कुछ प्रांतों में वर द्वारा वधू के गले में मंगल सूत्र पहनाने की रस्म की वही अहमियत है।

धार्मिक मान्यता-----

ऐसी मान्यता है कि मंगलसूत्र सकारात्मक ऊर्जा को अपनी ओर आकर्षित कर महिला के दिमाग़ और मन को शांत रखता है. मंगलसूत्र जितना लंबा होगा और हृदय के पास होगा वह उतना ही फ़ायदेमंद होगा. मंगलसूत्र के काले मोती महिला की प्रतिरक्षा प्रणाली को भी मज़बूत करते हैं।

वैज्ञानिक मान्यता------

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, मंगलसूत्र सोने से निर्मित होता है और सोना शरीर में बल व ओज बढ़ानेवाली धातु है, इसलिए मंगलसूत्र शारीरिक ऊर्जा का क्षय होने से रोकता है।

ग्यारहवां श्रृंगारः बाजूबंद----

कड़े के सामान आकृति वाला यह आभूषण सोने या चांदी का होता है। यह बाहों में पूरी तरह कसा जाता है। इसलिए इसे बाजूबंद कहा जाता है। पहले सुहागिन स्त्रियों को हमेशा बाजूबंद पहने रहना अनिवार्य माना जाता था और यह सांप की आकृति में होता था। ऐसी मान्यता है कि स्त्रियों को बाजूबंद पहनने से परिवार के धन की रक्षा होती और बुराई पर अच्छाई की जीत होती है।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, बाजूबंद महिलाओं के शरीर में ताक़त बनाए रखने व पूरे शरीर में उसका संचार करने में सहायक होता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, बाजूबंद बाजू पर सही मात्रा में दबाव डालकर रक्तसंचार बढ़ाने में सहायता करता है।

बारहवां श्रृंगारः कंगन और चूड़ियां----

सोने का कंगन अठारहवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों से ही सुहाग का प्रतीक माना जाता रहा है। हिंदू परिवारों में सदियों से यह परंपरा चली आ रही है कि सास अपनी बड़ी बहू को मुंह दिखाई रस्म में सुख और सौभाग्यवती बने रहने का आशीर्वाद के साथ वही कंगन देती थी, जो पहली बार ससुराल आने पर उसे उसकी सास ने उसे दिये थे। इस तरह खानदान की पुरानी धरोहर को सास द्वारा बहू को सौंपने की परंपरा का निर्वाह पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। पंजाब में स्त्रियां कंगननुमा डिजाइन का एक विशेष पारंपरिक आभूषण पहनती है, जिसे लहसुन की पहुंची कहा जाता है। सोने से बनी इस पहुंची में लहसुन की कलियां और जौ के दानों जैसे आकृतियां बनी होती है। हिंदू धर्म में मगरमच्छ,

हांथी, सांप, मोर जैसी जीवों का विशेष स्थान दिया गया है। उत्तर भारत में ज्यादातर स्त्रियां ऐसे पशुओं के मुखाकृति वाले खुले मुंह के कड़े पहनती हैं, जिनके दोनों सिरे एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। पारंपरिक रूप से ऐसा माना जात है कि सुहागिन स्त्रियों की कलाइयां चूड़ियों से भरी हानी चाहिए। यहां तक की सुहागन स्त्रियां चूड़ियां बदलते समय भी अपनी कलाई में साड़ी का पल्लू कलाई में लपेट लेती हैं ताकि उनकी कलाई एक पल को भी सूनी न रहे। ये चूड़ियां आमतौर पर कांच, लाख और हांथी दांत से बनी होती है। इन चूड़ियों के रंगों का भी विशेष महत्व है। नवविवाहिता के हाथों में सजी लाल रंग की चूड़ियां इस बात का प्रतीक होती हैं कि विवाह के बाद वह पूरी तरह खुश और संतुष्ट है। हरा रंग शादी के बाद उसके परिवार के समृद्धि का प्रतीक है। होली के अवसर पर पीली या बंसती रंग की चूड़ियां पहनी जाती है, तो सावन में तीज के मौके पर हरी और धानी चूड़ियां पहनने का रीवाज सदियों से चला आ रहा है। विभिन्न राज्यों में विवाह के मौके पर अलग-अलग रंगों की चूड़ियां पहनने की प्रथा है।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, चूड़ियां पति-पत्नी के भाग्य और संपन्नता की प्रतीक हैं. यह भी मान्यता है कि महिलाओं को पति की लंबी उम्र व अच्छे स्वास्थ्य के लिए हमेशा चूड़ी पहनने की सलाह दी जाती है. चूड़ियों का सीधा संबंध चंद्रमा से भी माना जाता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, चूड़ियों से उत्पन्न होनेवाली ध्वनि महिलाओं की हड्डियों को मज़बूत करने में सहायक होती है. महिलाओं के रक्त के परिसंचरण में भी चूड़ियां सहायक होती हैं।

तेरहवां श्रृंगारः अंगूठी-----

शादी के पहले मंगनी या सगाई के रस्म में वर-वधू द्वारा एक-दूसरे को अंगूठी को सदियों से पति-पत्नी के आपसी प्यार और विश्वास का प्रतीक माना जाता रहा है। हमारे प्राचीन धर्म ग्रंथ रामायण में भी इस बात का उल्लेख मिलता है। सीता का हरण करके रावण ने जब सीता को अशोक वाटिका में कैद कर रखा था तब भगवान श्रीराम ने हनुमानजी के माध्यम से सीता जी को अपना संदेश भेजा था। तब स्मृति चिन्ह के रूप में उन्होंनें अपनी अंगूठी हनुमान जी को दी थी।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, अंगूठी पति-पत्नी के प्रेम की प्रतीक होती है, इसे पहनने से पति-पत्नी के हृदय में एक-दूसरे के लिए सदैव प्रेम बना रहता है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, अनामिका उंगली की नसें सीधे हृदय व दिमाग़ से जुड़ी होती हैं, इन पर प्रेशर पड़ने से दिल व दिमाग़ स्वस्थ रहता है।

चौदहवां श्रृंगारः कमरबंद----

कमरबंद कमर में पहना जाने वाला आभूषण है, जिसे स्त्रियां विवाह के बाद पहनती हैं, इससे उनकी छरहरी काया और भी आकर्षक दिखाई पड़ती है। सोने या चांदी से बने इस आभूषण के साथ बारीक घुंघरुओं वाली आकर्षक की रिंग लगी होती है, जिसमें नववधू चाबियों का गुच्छा अपनी कमर में लटकाकर रखती है। कमरबंद इस बात का प्रतीक है कि सुहागन अब अपने घर की स्वामिनी है।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, महिला के लिए कमरबंद बहुत आवश्यक है. चांदी का कमरबंद महिलाओं के लिए शुभ माना जाता है।

वैज्ञानिक मान्यता-----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, चांदी का कमरबंद पहनने से महिलाओं को माहवारी तथा गर्भावस्था में होनेवाले सभी तरह के दर्द से राहत मिलती है. चांदी का कमरबंद पहनने से महिलाओं में मोटापा भी नहीं बढ़ता।

पंद्रहवाँ श्रृंगारः बिछुवा-----

पैरों के अंगूठे में रिंग की तरह पहने जाने वाले इस आभूषण को अरसी या अंगूठा कह जाता है। पारंपरिक रूप से पहने जाने वाले इस आभूषण में छोटा सा शीशा लगा होता है, पुराने जमाने में संयुक्त परिवारों में नववधू सबके सामने पति के सामने देखने में भी सरमाती थी। इसलिए वह नजरें झुकाकर चुपचाप आसपास खड़े पति की सूरत को इसी शीशे में निहारा करती थी पैरों के अंगूठे और छोटी अंगुली को छोड़कर बीच की तीन अंगुलियों में चांदी का विछुआ पहना जाता है। शादी में फेरों के वक्त लड़की जब सिलबट्टे पर पेर रखती है, तो उसकी भाभी उसके पैरों में बिछुआ पहनाती है। यह रस्म इस बात का प्रतीक है कि दुल्हन शादी के बाद आने वाली सभी समस्याओं का हिम्मत के साथ मुकाबला करेगी।

धार्मिक मान्यता----

महिलाओं के लिए पैरों की उंगलियों में बिछिया पहनना शुभ व आवश्यक माना गया है. ऐसी मान्यता है कि बिछिया पहनने से महिलाओं का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और घर में संपन्नता बनी रहती है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, महिलाओं के पैरों की उंगलियों की नसें उनके गर्भाशय से जुड़ी होती हैं, बिछिया पहनने से उन्हें गर्भावस्था व गर्भाशय से जुड़ी समस्याओं से राहत मिलती है. बिछिया पहनने से महिलाओं का ब्लड प्रेशर भी नियंत्रित रहता है।

सोलहवां श्रृंगारः पायल----

पैरों में पहने जाने वाले इस आभूषण की सुमधुर ध्वनि से घर के हर सदस्य को नववधू की आहट का संकेत मिलता है। पुराने जमाने में पायल की झंकार से घर के बुजुर्ग पुरुष सदस्यों को मालूम हो जाता था कि बहू आ रही है और वे उसके रास्ते से हट जाते थे। पायल के संबंध में एक और रोचक बात यह है कि पहले छोटी उम्र में ही लड़िकियों की शादी होती थी। और कई बार जब नववधू को माता-पिता की याद आती थी तो वह चुपके से अपने मायके भाग जाती थी। इसलिए नववधू के पैरों में ढेर सारी घुंघरुओं वाली पाजेब पहनाई जाती थी ताकि जब वह घर से भागने लगे तो उसकी आहट से मालूम हो जाए कि वह कहां जा रही है पैरों में पहने जाने वाले आभूषण हमेशा सिर्फ चांदी से ही बने होते हैं। हिंदू धर्म में सोना को पवित्र धातु का स्थान प्राप्त है, जिससे बने मुकुट देवी-देवता धारण करते हैं और ऐसी मान्यता है कि पैरों में सोना पहनने से धन की देवी-लक्ष्मी का अपमान होता हैं।

धार्मिक मान्यता----

मान्यताओं के अनुसार, महिला के पैरों में पायल संपन्नता की प्रतीक होती है. घर की बहू को घर की लक्ष्मी माना गया है, इसी कारण घर में संपन्नता बनाए रखने के लिए महिला को पायल पहनाई जाती है।

वैज्ञानिक मान्यता----

वैज्ञानिक मान्यताओं के अनुसार, चांदी की पायल महिला को जोड़ों व हड्डियों के दर्द से राहत देती है. साथ ही पायल के घुंघरू से उत्पन्न होनेवाली ध्वनि से नकारात्मक ऊर्जा घर से दूर रहती हैं

कामिका एकादशी व्रत आज

धार्मिक मान्यता के अनुसार, कामिका एकादशी व्रत करने से साधक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होती है और श्रीहरि की कृपा प्राप्त होती है। वैदिक पंचांग के अनुसार, इस बार कामिका एकादशी व्रत 21 जुलाई को किया जाएगा। इस व्रत का पारण अगले दिन यानी द्वादशी तिथि पर किया जाता है। इसके बाद विशेष चीजों का दान जरूर करना चाहिए।

कामिका एकादशी शुभ मुहूर्त

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, सावन माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 21 जुलाई को दोपहर 12 बजकर 12 मिनट पर होगी और इस तिथि का समापन 21 जुलाई को सुबह 09 बजकर 38 मिनट पर होगा। ऐसे में कामिका एकादशी व्रत 21 जुलाई को किया जाएगा।

कामिका एकादशी व्रत पारण का समय

==========

कामिका एकादशी व्रत का पारण 22 जुलाई को किया जाएगा। इस दिन व्रत का पारण करने का समय 22 जुलाई को सुबह 05 बजकर 37 मिनट से लेकर सुबह 07 बजकर 05 मिनट तक है। इस दौरान किसी भी समय व्रत का पारण किया जा सकता है।

कामिका एकादशी व्रत पारण की विधि

==========

सुबह स्नान करने के बाद साफ कपड़े धारण करें। इसके बाद सूर्य देव को अर्घ्य दें। मंदिर की सफाई करने के बाद गंगाजल का छिड़काव कर शुद्ध करें। भगवान विष्णु के सामने देसी घी का दीपक जलाकर आरती करें। मंत्रों का जप और विष्णु चालीसा का पाठ करें। प्रभु को सात्विक चीजों का भोग लगाएं। अंत में लोगों में अन्न और धन समेत आदि चीजों का दान करें और खुद भी प्रसाद ग्रहण करें।

कामिका एकादशी के दिन भगवान विष्णु को ऐसे करें प्रसन्न

==========

शुभ फल की प्राप्ति के लिए कामिका एकादशी के दिन दूध में केसर मिलाकर भगवान विष्णु को भोग लगाएं। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस उपाय को करने से भगवान विष्णु प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा हमेशा बनी रहती है।

कामिका एकादशी व्रत का महत्व

==========

कामिका एकादशी पर भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा करने से धन, सुख, शांति, समाजिक प्रतिष्ठा और मोक्ष की प्राप्ति होती है। मान्यता है कि इस दिन यदि पूरी श्रद्धा और विधि से पूजा की जाए, तो पाप नष्ट होते हैं, और जीवन में स्थिरता आती है। विष्णु जी को कुछ विशेष वस्तुएं जैसे तुलसी, पीले फूल, फल और वस्त्र अर्पित करने से करियर, नौकरी और रिश्तों में भी अच्छे परिणाम मिलते हैं।

कामिका एकादशी की पूजा कैसे करें?

==========

1. सुबह-सुबह स्नान कर तन-मन को शुद्ध करें।

2. सूर्य नारायण को जल चढ़ाएं और व्रत का संकल्प लें।

3. घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व दिशा) में एक चौकी रखें, उस पर पीला कपड़ा बिछाएं।

4. श्रीहरि विष्णु की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें और घी का दीपक जलाएं।

5. भगवान को पीले पुष्प, पीले फल, पीले वस्त्र और पीले मिष्ठान अर्पित करें।

अपने शरीर के संकेतो को अनदेखा ना करें।

हमारा शरीर खुद एक डॉक्टर है । आने वाली बीमारी या शरीर में होने वाले परिवर्तन को वो खुद बता देता हैं लेकिन हम शरीर के इन संकेतों को अनदेखा कर देते हैं। अगर हम अपने शरीर के इन संकेतों को वक्त रहते समझ जाएं तो बहुत सी बीमारियों का सही समय पर इलाज करा सकते हैं।

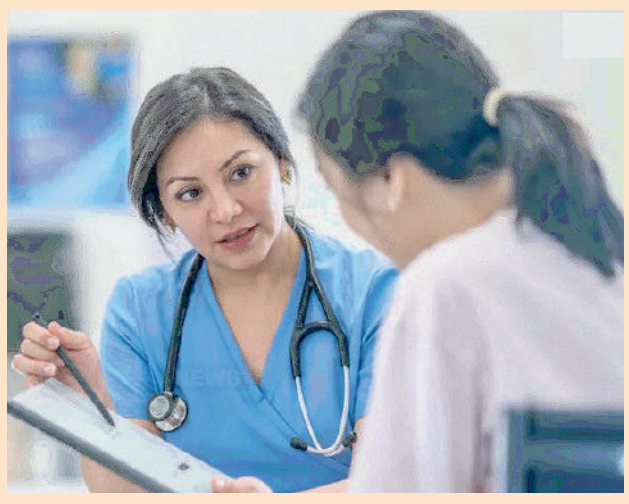

जीभ पर सफेद या भूरे रंग का मैल जमना पेट की खराबी को बताता है।

निमोनिया, प्लूरिसी आदि रोग में नाक के नथुने तेजी से फड़कते हैं।

अधिक थकावट या पुराने कब्ज में आखों के नीचे कालापन आ जाता है।

कमजोरी, खून की कमी, ल्यूकोरिया (श्वेत-प्रदर) आदि में आंखों के चारों तरफ कालापन आ जाता है।

किडनी के कार्य में रुकावट आने पर आंखों के नीचे सूजन आ जाती है।

बुखार आने पर होठों के कोने पर सफेद छाले हो जाते हैं।

पीरियड्स कम आने पर गालों पर झाइयां हो जाती हैं।

फेफड़ों (lungs) में इन्फेक्शन होने पर गाल लाल हो जाते हैं।

टायफाइड में शाम को शरीर का तापमान एक डिग्री बढ़ जाता है।

पेट में कीड़े होने पर बच्चे सोते समय दांत किटकिटाते हैं या सोते समय बिस्तर पर यूरिन कर देते हैं।

पेट में कीड़े होने पर बच्चों को नाक और मलद्वार में खुजली होती है।

तिल्ली बढ़ने पर जीभ का रंग सफेद हो जाता है।

आंतों और पेट के रोग में जीभ पर छाले पेट में कीड़े होने पर चेहरे पर हल्के सफेद रंग के धब्बे हो जाते हैं।

लो ब्लडप्रेशर और खून की कमी होने पर आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है।

महिलाओं में यूट्रस (बच्चेदानी) में रोग होने पर हाथ की उंगलियों के पीछे कालापन आ जाता है।

अधिक वीर्यनाश से गाल पिचक जाते है।

पेट के रोग या किसी लंबी बीमारी में होंठ फटने लगते हैं।

हाइपोथायरॉइडिज्म (थाइरॉइड ग्लैंड का हरमोन कम निकलना) में गले में सूजन आ जाती है।

यदि आप बड़ी बीमारी से बचना चाहते हैं तो अपने शरीर के छोटे से छोटे परिवर्तन को भी अनदेखा न करें।

बदायूं में एक तरफ 140 सरकारी स्कूल मर्जर किये जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर निजी स्कूलों में बच्चों की संख्या की भरमार है

परिवहन विशेष न्यूज

ये निजी स्कूलों में कुछ बिना मानकों के भी मान्यता लेकर चला रहे तो की स्कूल विना मान्यता के फल-फूल रहे हैं

ये स्कूल डीएम के निर्देश भी नहीं मानते

कांवड़ यात्रा को लेकर जिलाधिकारी के निर्देश पर जिले भर में शनिवार और सोमवार को स्कूल बंद रखने के आदेश हैं

वहीं उसावां ब्लाक क्षेत्र में खेडा किशनी से आगे सडक किनारे स्थित निजी स्कूल आज शनिवार को भी खुला

ऐसे और भी स्कूल हैं जो प्रशासन के निर्देशों की धज्जियां उड़ाते नजर आते हैं

लेकिन शिक्षा विभाग अनदेखी करता है, इसी तरह की अनदेखी से ही सरकारी स्कूल की संख्या कम हो रही है

कार्यालय– जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, बदायूँ।

पत्रांकः बेसिक/ /2025–26 दिनांकः 11 –07–2025

कार्यालय आदेश

श्रवण मास प्रारम्भ होने एवं शिवभक्तों की सुरक्षा के दृष्टिगत प्रशासन द्वारा सभी मुख्य मार्ग पर रूट डायवर्जन किये जाने की स्थिति में जिलाधिकारी महोदय, बदायूँ की अनुमति उपरान्त उ०प्र० बेसिक शिक्षा परिषद के अन्तर्गत संचालित कक्षा 1 से 8 तक के समस्त परिषदीय, मान्यता प्राप्त, सहायता प्राप्त एवं समस्त बोर्डो से संचालित विद्यालय श्रावण मास के प्रत्येक शनिवार एवं सोमवार को बन्द रहेगें।

तद्नुसार आदेशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाये।

ह०–
(वीरेन्द्र कुमार सिंह)
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
बदायूँ।

पृ0सं0: बेसिक/ 4148-54 /2025–26 दिनांक उक्तवत्।

प्रतिलिपि निम्नांकित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

01– महानिदेशक, स्कूल शिक्षा, उ०प्र० लखनऊ।
02– जिलाधिकारी महोदय, बदायूँ।
03– मुख्य विकास अधिकारी महोदय, बदायूँ।
04– शिक्षा निदेशक (बेसिक), उ०प्र० लखनऊ।
05– सचिव, उ०प्र० बेसिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज।
06– सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक), बरेली मण्डल, बरेली।
07– समस्त खण्ड शिक्षा अधिकारियों को उपरोक्तानुसार अनुपालनार्थ।

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
बदायूँ।

बदायूं में बाढ खंड द्वारा तटबंध पर कराया निर्माण कार्य की गुणवत्ता अत्यंत घटिया

तटबंध को गत वर्ष मिट्टी कार्य करा कर चौडा कराया गया था

तटबंध पर काली सडक भी डलवायी गई थी

एक बर्ष ही बीता कि तटबंध पर और तटबंध पर डाली गई काली सडक टूटने लगी

अभी तो ठीक से बरसात भी नहीं हुई कि तटबंध जगह-जगह बुरी तरह टूट गया है

ग्रामीणों ने बताया ठेकेदार ने बाढ खंड की सांठगांठ से घटिया काम कराया है, सरकार ठेकेदार पर सख्त कार्रवाई करे

परम्गौसेवी एवं सद्गृहस्थ संत थे ब्रह्मलीन भरत दास महाराज : देवदास महाराज 'बड़े सरकार'

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मट (मथुरा)।यमुना पार स्थित देवरहा बाबा समाधि स्थल पर ब्रह्मलीन भरत दास महाराज का स्मृति महोत्सव ब्रह्मर्षि देवदास महाराज ₹बड़े सरकार₹ के पावन सानिध्य में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। सर्वप्रथम ब्रह्मलीन भरत दास महाराज के चित्रपट का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पुष्पार्चन किया गया।साथ ही उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत सम्मेलन में देवरहा बाबा समाधि स्थल आश्रम के अध्यक्ष ब्रह्मर्षि देवदास महाराज बड़े सरकार ने कहा कि ब्रह्मलीन भरत दास महाराज परम-गौसेवी एवं सद्गृहस्थ संत थे।उन्होंने आजीवन पूर्णनिष्ठा के साथ गायों की सेवा की थी।

श्रीमहन्त रामकेवल दास महाराज एवं श्रीमद्जगद्गुरु विष्णुस्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (बल्लभगढ़ वाले) ने कहा कि ब्रह्मलीन भरत दास महाराज ब्रह्मलीन देवरहा बाबा महाराज के परम-कृपापात्र शिष्य थे।वे आश्रम परिसर में स्थापित गौशाला में ही निवास करते थे।

महंत शिवदत्त प्रपन्नाचार्य महाराज एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि ब्रह्मलीन भरत दास महाराज मूलतः वाराणसी के निवासी थे। परन्तु उनके जीवन का अधिकांश समय मुंबई में व्यतीत हुआ।वे रेलवे के पूर्व उच्चाधिकारी रहे थे।सेवा निवृत्ति के बाद उन्होंने 40 से भी अधिक गौशालाओं की स्थापना की।ऐसे परम-गौ-भक्त सद्गृहस्थ संत को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं।

महोत्सव में श्रीमहन्त अभयप्रपन्न रामानुज दास महाराज, महंत प्रह्लाद दास महाराज,महन्त जगन्नाथ दास शास्त्री, महंत भागवताचार्य महाराज, महंत संतोष पुजारी, महन्त श्यामदास महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, राष्ट्रीय शीतल संघ के महंत रामदास महाराज, महाराजश्री के परम-कृपापात्र शिष्य नीरज शर्मा, रमेश यादव (दिल्ली), प्रदीप राणा, अमरजीत सिंह, उमेश चन्द, भरत हरवानी (मुम्बई), श्रीमती निशा डागुर आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन महंत शिवदत्त प्रपन्नाचार्य महाराज ने किया। महोत्सव के अंतर्गत महामंडलेश्वरों, श्रीमहंतों, महंतों और विद्वानों आदि का सम्मान किया गया।साथ ही संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा भी हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

पीस पार्टी दिल्ली प्रदेश यूथ विंग का गठन

अब्दुल खालिक अध्यक्ष, नेमतुल्ला कमाल और कैफ उपाध्यक्ष, नवाज़ सरवर महासचिव,

समीर और शहबाज़ सचिव, और अरसलान संयुक्त सचिव नियुक्त

नई दिल्ली (संवाददाता):

देश की राजनीति में युवाओं को सक्रिय और प्रभावशाली भूमिका देने के उद्देश्य के साथ पीस पार्टी ने दिल्ली प्रदेश यूथ विंग का औपचारिक गठन किया है। इस सिलसिले में एक महत्वपूर्ण बैठक पार्टी के दिल्ली प्रदेश कार्यालय में आयोजित की गई, जिसमें पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग भी शामिल हुए।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पीस पार्टी दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष और राष्ट्रीय प्रवक्ता हाफिज़ ग़ुलाम सरवर ने की। उन्होंने नई युवा नेतृत्व टीम की घोषणा करते हुए सभी नव-नियुक्त युवाओं का पार्टी में गर्मजोशी से स्वागत किया और उन पर विश्वास जताया।

इस अवसर पर अब्दुल खालिक को दिल्ली प्रदेश यूथ विंग का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनके साथ नेमतुल्ला कमाल और कैफ को उपाध्यक्ष, नवाज़ सरवर को महासचिव, समीर और मोहम्मद शहबाज़ को सचिव तथा अरसलान को संयुक्त सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई।

हाफिज़ ग़ुलाम सरवर ने अपने संबोधन में कहा कि पीस पार्टी का मानना है कि युवा ही देश की असली पूंजी हैं। जब युवा नेतृत्व राजनीति के मैदान में कदम रखता है तो समाज तरक्की की राह पर अग्रसर होता है। हमारा उद्देश्य युवाओं को नेतृत्व की राह दिखाना है, ताकि वे न केवल अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ सकें, बल्कि दूसरों के लिए भी आवाज़ उठा सकें। हम चाहते हैं कि युवा पार्टी की नीतियों को जनता तक पहुँचाएँ और जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं को समझकर उनके समाधान की कोशिश करें। पीस पार्टी युवाओं को केवल दिखावटी पद नहीं देती, बल्कि उन्हें व्यावहारिक राजनीति में प्रशिक्षित करती है और मार्गदर्शन भी प्रदान करती है।

बैठक के समापन पर सभी नव-नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई दी गई और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई। उपस्थित जनों ने पार्टी नेतृत्व के इस फैसले की सराहना की और उम्मीद जताई कि नई टीम दिल्ली में पीस पार्टी की मौजूदगी को और मज़बूत बनाएगी।

तेलंगाना और मध्यप्रदेश की प्रभारी बनाई गईं गीता सोनी

सुनील चिंचोलकर

जांजगीर,छत्तीसगढ़। भारतीय मजदूर संघ से संबंधित भारतीय प्राईवेट मजदूर महासंघ की दो दिवसीय अखिल भारतीय पदाधिकारी बैठक हरियाणा के कुरुक्षेत्र में आयोजित हुई। बैठक में भारतीय मजदूर संघ जिला जांजगीर की कार्यकारी अध्यक्ष व बीएमएस प्रदेश सदस्य गीता सोनी को तेलंगाना स्टेट और मध्य-प्रदेश के प्रभारी का दायित्व सौंपा गया। गौरतलब है कि गीता सोनी एक लम्बे अरसे से मजदूरों के हित में कार्य कर रही हैं।

बैठक में उत्तर क्षेत्र के संगठन मंत्री पवन कुमार और भारतीय मजदूर संघ हरियाणा के प्रांत महामंत्री हवा सिंह मेहला का सानिध्य प्राप्त हुआ। बैठक में 8 प्रान्तों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता भारतीय प्राईवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष योगेश शर्मा ने अध्यक्षता की। बैठक का संचालन महामंत्री रवि शंकर आलूरी ने किया। भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ की अखिल भारतीय मंत्री गीता सोनी छत्तीसगढ़ को तेलंगाना स्टेट और मध्य प्रदेश का प्रभारी बनाये जाने पर अध्यक्ष योगेश शर्मा ने उनका सत्कार किया।

उन्होंने कहा कि पूरे देश में महिला चालकों को संगठित करने में गीता सोनी का योगदान महत्वपूर्ण है और छत्तीसगढ़ में चालकों की समस्याओं के समाधान से गीता सोनी का चालकों के प्रति विश्वास बढ़ा है।

गीता सोनी ने कहा मुझे राष्ट्रीय मंत्री का दायित्व संभालने का मौका दिया गया हैं इसके लिए मै महामंत्री रविशंकर अल्लुरी और अध्यक्ष योगेश शर्मा का आभार प्रकट करती हूँ। गीता ने भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ और भारतीय मजदूर संघ के लिए समय देने और कार्य बढ़ाने का आश्वासन दिया। उन्होनें कहा कि छत्तीसगढ़ में भी ट्रांसपोर्ट का हर जिले में यूनियन गठन किया जाएगा और चालक परिचालक के श्रमिक हित में हम काम करते रहेंगे।

खेरिया मोड़ विवाद सुलझा: जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की पहल से हुआ समझौता

भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह के आग्रह पर हुई पहल में शहर के जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने मध्यस्थता की भूमिका निभाई

आगरा, संजय साग़र सिंह। बृहस्पतिवार को खेरिया मोड़ स्थित सराय ख्वाजा में नगर निगम कर्मचारियों और स्थानीय दुकानदारों के बीच हुए विवाद ने तूल पकड़ लिया था। इस घटना में सेनेटरी इंस्पेक्टर प्रदीप गौतम सहित ११ निगमकर्मियों के विरुद्ध पुलिस में प्राथमिकी दर्ज की गई थी। मामला राजनीतिक और प्रशासनिक हलकों में भी चर्चा का विषय बन गया था।

हालाँकि, जनहित को प्राथमिकता देते हुए शुक्रवार प्रातः खैरागढ़ के लोकप्रिय विधायक भगवान सिंह कुशवाहा के आवास पर दोनों पक्षों के बीच सौहार्दपूर्ण समझौता सम्पन्न हुआ। भाजपा नेता उपेन्द्र सिंह के आग्रह पर हुई इस पहल में शहर के जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने मध्यस्थता की भूमिका निभाई। स्थानीय नागरिकों और व्यापारियों ने इस पहल का स्वागत किया है और उम्मीद जताई है कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं से बचने के लिए प्रशासन और जनप्रतिनिधि मिलकर सतत संवाद बनाए रखेंगे। समझौते में फतेहपुर सीकरी के सांसद राजकुमार चाहर, मेयर हेमलता दिवाकर कुशवाहा, नगर आयुक्त अंकित खंडेलवाल, सुनील लवानिया और नेतृपाल सिंह सहित कई गणमान्य नागरिकों का सहयोग सराहनीय रहा।

बदायूं में बाढ खंड द्वारा तटबंध पर कराया निर्माण कार्य की गुणवत्ता अत्यंत घटिया

तटबंध को गत वर्ष मिट्टी कार्य करा कर चौडा कराया गया था
तटबंध पर काली सडक भी डलवायी गई थी
एक बर्ष ही बीता कि तटबंध पर और तटबंध पर डाली गई काली सडक टूटने लगी
अभी तो ठीक से बरसात भी नहीं हुई कि तटबंध जगह-जगह बुरी तरह टूट गया है
ग्रामीणों ने बताया ठेकेदार ने बाढ खंड की सांठगांठ से घटिया काम कराया है, सरकार ठेकेदार पर सख्त कार्रवाई करे

गाजियाबाद पहुंचे सीएम योगी आदित्यनाथ, भाजपा नेताओं के साथ दूधेश्वरनाथ मंदिर में किया दर्शन-पूजन

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गाजियाबाद पहुंचकर दूधेश्वरनाथ मंदिर में भाजपा नेताओं के साथ दर्शन-पूजन किया। सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही। सांसद अतुल गर्ग और भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल भी उपस्थित थे। मंदिर में सावन शिवरात्रि के लिए तीन दिवसीय कांवड़ मेला 21 जुलाई से शुरू होगा जिसमें लाखों शिवभक्त जलाभिषेक करेंगे।

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को गाजियाबाद पहुंचे। उन्होंने दूधेश्वरनाथ मंदिर जाकर भाजपा नेताओं के साथ दर्शन-पूजन किया। सीएम के दौरे को लेकर मंदिर के आसपास सुरक्षा चाक चौबंद रही। इस दौरान सांसद अतुल गर्ग और भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल ने भी मंदिर में दर्शन किए।

ताजा जानकारी के मुताबिक, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दूधेश्वरनाथ मंदिर में दर्शन के बाद हापुड़ रोड स्थित पुलिस लाइन के लिए रवाना हो गए। इस दौरान कुछ देर के लिए ट्रैफिक रोका जाएगा। पुलिस लाइन से हेलीकॉप्टर के जरिए मेरठ के लिए उड़ान भरेंगे। मेरठ से सीएम कांवड़ियों पर पुष्प वर्षा करेंगे।

दूधेश्वरनाथ मंदिर में शिवभक्तों के लिए तैयारी पूरी

सावन माह में शिवभक्ति का उत्साह चरम पर है और इसी क्रम में 23 जुलाई को मनाई जाने वाली सावन शिवरात्रि पर दूधेश्वरनाथ मठ मंदिर में लाखों कांवड़िएं व शिवभक्त भगवान शिव का जलाभिषेक करेंगे। इस विशेष अवसर पर तीन दिवसीय कांवड़ मेला 21 जुलाई से शुरू होगा।

शनिवार को महंत नारायण गिरि महाराज ने मंदिर परिसर में पत्रकार वर्ता कर बताया कि 22 जुलाई को त्रयोदशी का जल चढ़ेगा। त्रयोदशी सुबह 7:06 बजे लगेगी और रात 2:29 बजे समाप्त होगी। इसके बाद चतुर्दशी तिथि 23 जुलाई को सुबह चार बजे से शुरू होकर पूरे दिन कावंड़ का जल चढ़ाने के लिए शुभ है।

भक्त पूरे दिन कभी भी जलाभिषेक कर सकते हैं। व्रत का पारण 24 जुलाई को किया जाएगा। मंदिर विकास समिति के अध्यक्ष धर्मपाल गर्ग ने बताया कि देशभर से आने वाले कांवड़ियों के लिए हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। कांवड़ियों की सेवा के लिए मंदिर के स्वयंसेवक 24 घंटे तैनात रहेंगे।

रोडवेज की 350 से ज्यादा बसें प्रभावित, लंबे रूटों पर 50 से 100 रुपये तक बढ़ा किराया

रोडवेज की 350 से ज्यादा बसें प्रभावित, लंबे रूटों पर 50 से 100 रुपये तक बढ़ा किराया

कांवड़ यात्रा के चलते गढ़मुक्तेश्वर में एनएच-नौ बंद होने से रूट डायवर्जन हुआ है। इससे रोडवेज की 350 से अधिक बसें प्रभावित हैं और लंबे रूटों पर किराया बढ़ गया है जिससे लगभग 50 हजार यात्रियों पर अतिरिक्त भार पड़ेगा। कौशांबी डिपो और गाजियाबाद डिपो से चलने वाली बसों के रूट बदले गए हैं। यात्रियों को 23 जुलाई तक इस समस्या का सामना करना पड़ेगा।

गढ़मुक्तेश्वर, संभल, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली, धामपुर व कालागढ़ आदि का बदला रूट

इससे रोडवेज बसों में सफर करने वाले यात्रियों को चुकाना पड़ रहा अतिरिक्त किराया

जागरण संवाददाता, साहिबाबाद। कांवड़ यात्रा के चलते गढ़मुक्तेश्वर में एनएच-नौ शुक्रवार रात से बंद होने के कारण डायवर्जन हो गया है। इससे रोडवेज की करीब 350 से अधिक बसें प्रभावित हो गई हैं। लंबे रूटों पर 50 से 100 रुपये तक किराया बढ़ा है। इससे रोजाना करीब 50 हजार यात्रियों को अतिरिक्त भार झेलना पड़ेगा। यह समस्या 23 जुलाई तक बनी रहेगी।

डायवर्जन के कारण कौशांबी डिपो से गढ़मुक्तेश्वर, संभल, रामपुर, मुरादाबाद, बरेली, धामपुर व कालागढ़ के लिए संचालित बसों का रूट बदल गया है। वहीं, शहर में बाहरी वाहनों पर रोक लगने पर गाजियाबाद डिपो से बुलंदशहर, खुर्जा, अलीगढ़ व मेरठ के लिए संचालित बसों का रूट बदल गया है।

इन शहरों की बसों के अनूप शहर व बुलंदशहर होते हुए संबंधित रूटों पर भेजा जा रहा है। बसों के रूट बदलने से किलोमीटर भी बढ़ गया है। इससे सभी रूटों पर किराया बढ़ गया है। इसके लिए इलेक्ट्रानिक टिकिट मशीनों (ईटीएम) को अपडेट करा दिया गाय है।

यूपी गेट व एनएच-नौ से संचालित हो रहीं बसें

मोहननगर से भारी वाहनों का डायवर्जन चल रहा है। जिन शहरों की बसों का संचालन मोहननगर से किया जा रहा है, उन बसों का संचालन अब यूपी गेट होते हुए एनएच-नौ से किया जा रहा है।

लालकुआं पर बना अस्थाई बस अड्डा

शहर में बसों के प्रवेश पर रोक लग जाने से अलीगढ़ व बुलंदशहर की बसों के संचालन के लिए लालकुआं पर अस्थाई बस अड्डा बना दिया गया है। वहीं, मेरठ की बसों का संचालन डासना से किया जा रहा है।

गढ़मुक्तेश्वर से डायवर्जन होने के कारण बसों का संचालन बुलंदशहर होते हुए किया जा रहा है। इससे बसों का किलोमीटर बढ़ने के कारण किराया भी बढ़ा है। महाशिवरात्रि तक यही स्थिति रहेगी।

-अंशु भटनागर, सहायक क्षेत्रीय

'हमें एएआईबी पर पूरा विश्वास, पश्चिमी मीडिया कयास न लगाए', विमान हादसे की रिपोर्ट पर बोले नायडू

केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राम मोहन नायडू ने अहमदाबाद विमान हादसे पर एएआईबी की अंतिम रिपोर्ट का इंतजार करने की बात कही है। उन्होंने पश्चिमी मीडिया से जल्दबाजी में टिप्पणी न करने का आग्रह किया। मंत्री ने कहा कि ब्लैक बॉक्स का डेटा भारत में ही डिकोड किया गया है। सरकार विमानन सुरक्षा को लेकर प्रतिबद्ध है।

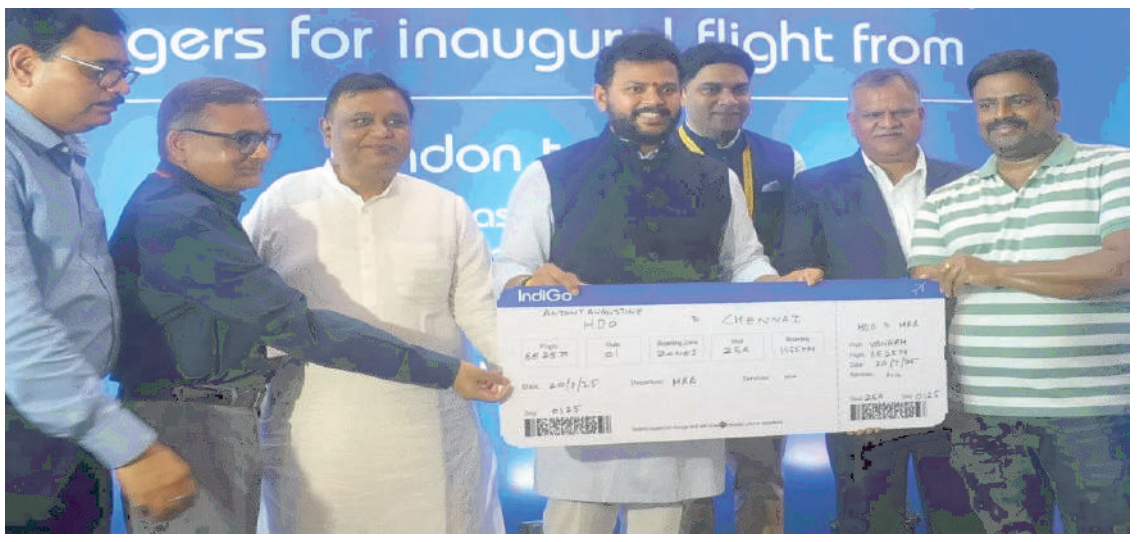

साहिबाबाद। केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राम मोहन नायडू ने कहा है कि वह अहमदाबाद विमान हादसे पर भारतीय विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) की अंतिम रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं।

उन्होंने खास तौर पर पश्चिमी मीडिया से अपील की है कि जल्दबाजी में कुछ भी बोलना ठीक नहीं है। जिस तरह पश्चिमी मीडिया लेख प्रकाशित करने का प्रयास कर रहा है, उसमें उनका स्वार्थ निहित हो सकता है। उन्हें एएआईबी पर विश्वास है। उन्होंने ये बातें हिंडन एयरपोर्ट पर नई उड़ानों को हरी झंडी देते हुए मीडिया से कहीं।

मंत्री ने एएआईबी की सराहना करते हुए कहा कि ब्लैक बाक्स का डेटा भारत में ही सफलतापूर्वक डिकोड कर लिया। उन्होंने ब्लैक बाक्स को पूरी तरह डिकोड करने और डेटा भारत में ही निकालने का काम किया है। यह बड़ी उपलब्धि है।

पहले जब कभी ब्लैक बाक्स को नुकसान होता था तो डेटा निकालने के लिए उसे विदेश भेजा जाता था। यह पहली बार हुआ है जब एएआईबी डेटा को सफलतापूर्वक यहीं डिकोड कर लिया है। जब तक जांच पूरी नहीं हो जाती, तब तक कोई निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा।

अंतिम रिपोर्ट नहीं आने तक कोई भी टिप्पणी करना किसी के लिए भी सही नहीं होगा। रिपोर्ट का पूरा अध्ययन कर रहे हैं और सुरक्षा के दृष्टि से जो भी जरूरी होगा वह करने के लिए तैयार हैं। सरकार विमानन सुरक्षा को लेकर पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

विमान हादसे में हुई थी 260 लोगों की मौत

12 जून को अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल इंटरनेशनल हवाई अड्डे से बोइंग 787-8 विमान (फ्लाइट एआइ 171) उड़ान भरने के तुरंत बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। दुर्घटना में 260 लोगों की मौत हो गई थी। इनमें 229 यात्री, 12 चालक दल के सदस्य और 19 लोग उस मकान और उसके आसपास थे। इस हादसे में एक यात्री बच गया था।

एएआईबी की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट

एएआईबी ने विमान हादसे की प्रारंभिक रिपोर्ट जारी की थी। विमान ने भारतीय समयानुसार एक बजकर 38 मिनट 42 सेकंड पर अधिकतम दर्ज की गई गति 180 नाट्स आइएएस हासिल की। एक सेकेंड बाद ही इंजन- एक और इंजन- दो के ईंधन कटआफ स्विच हो गए। काकपिट वायस रिकार्डिंग के अनुसार कहा गया कि एक पायलट ने दूसरे से पूछा कि उसने ईंधन स्विच आफ क्यों किया। तो वह जवाब देता है कि उसने ऐसा नहीं किया। इसके बाद विमान ने ऊंचाई खोनी शुरू कर दी। यह केवल प्रारंभिक रिपोर्ट थी। अंतिम रिपोर्ट आने से पहले ही विदेशी मीडिया पायलट की गलती बता रहा है।

एएआईबी क्या है

भारत सरकार ने एएआईबी की स्थापना 30 जुलाई, 2012 को की थी। एएआईबी नागरिक विमानन मंत्रालय के अधीन है। यह स्वतंत्र रूप से विमान हादसों की जांच करता है।

सावन दूसरा सोमवार आज : भक्तों के लिए सभी शिव मंदिर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां सावन के दूसरे सोमवार पर भगवान शिव के दर्शन के लिए आने वाले भक्तों की सुरक्षा के लिए कड़े इंतजाम किए गए हैं। जिसमें यातायात परिवर्तन को भी शामिल किया गया है !

यहां शहर के सभी शिव मंदिरों में सुरक्षा के पुख्ता इंतजामों के बीच भोले बाबा के दर्शनों के लिए भक्तों की भीड़ सोमवार तड़के दो-तीन बजे से ही उमड़न लगती है।

इस बीच सभी प्रमुख मंदिरों में सीसीटीवी और ड्रोन से पल-पल की निगरानी की भी व्यवस्था की गई है। साथ ही पुलिस, पीएसी और आरएएफ का कड़ा पहरा भी रहेगा, ताकि भक्त सुरक्षित तरीके से मंदिरों में दर्शन कर सकें।

कुल मिलाकर यहां के शिव मंदिरों में आज सावन के दूसरे सोमवार पर देर रात से ही लाइन लगना शुरू हो जायेगी। जिसके लिए अफसरों ने मंदिरों की निगरानी शुरू कर दी है।

इसी तरह से देहात में कहिंजरी के महाकालेश्वर मंदिर, सुभाष नगर के महादेवन मंदिर, असालतगंज के द्रोणेश्वर मंदिर, खेड़ाकुर्सी के संगमेश्वर शिव मंदिर, कृष्णदत्त निवादा के शिव मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ होती है।

इसी क्रम में जिनई के वाणेश्वर धाम मंदिर में आसपास के गांवों के लोग भी बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। डेरापुर के कपालेश्वर मंदिर में पूजन बहुत धूमधाम से किया जाता है। इसी तरह से आज सावन के दूसरे सोमवार पर शिवली के महाकालेश्वर मंदिर बैरी सवाई, भागवतेश्वर कडनी, बाघपुर के योगेश्वर, शिवली के साकेतधाम, ओमकारेश्वर, महाकालेश्वर मंदिर, मानसिला मंदिर में भी भक्तों की भारीभीड़ होने की संभावना है ,जिसके लिए सुरक्षा के भी तगड़े इंतजाम किए गए हैं।

अमेरिका में ट्रंप के खिलाफ़ जबरदस्त प्रदर्शन-गुड ट्रबल लाइव ऑन नमक विरोध आंदोलन-50 राज्यों के 1600 जगहों पर आंदोलन

घर में घिरे ट्रंप-लोकप्रियता व अप्रूवल रेटिंग में भारी गिरावट

डोनाल्ड ट्रंप का अमेरिका में अपनी पार्टी सहित, यूरोपीय यूनियन, व दुनियाँ के अनेक देशों में टैरिफ, इमीग्रेशन मुद्दों क़ा विरोध-लोग सड़कों पर उतरे- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के हर लोकतांत्रिक देश के प्रमुखों को अपने देश पर दीर्घकालिक अवधि तक पद पर बने रहना है, तो उन्हें नेतृत्व के गुणों का धनी होना पड़ेगा,जिसमें त्वरित निर्णय, सबका साथ सबका विकास दुनियाँ को एक परिवार मानना, अपने राष्ट्र को सर्वोपरि सहित कई मामलों में अमेंडेड, दृढ़ संकल्प, विश्वास के साथ सत्ता का संचालन करना होता है, अन्यथा सत्ता संभालनें के कुछ महीनो में ही जनता का मोह भंग हो जाता है व धरनें आंदोलन शुरू हो जाते हैं,इसका मकसद नागरिक अपनी नाराजगी व्यक्त करते हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि यह अहिंसात्मक आंदोलन कर अपनी जायज मांगों को रखना चाहते हैं,ताकि अन्याय कोसमाप्त किया जा सके। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं,क्योंकि पिछले कुछ दिनों से मैं अमेरिका में चल रही राजनीति का रिसर्च कर रहा हूं, अमेरिका में हम देख रहे हैं कि गुड ट्रैवल लाइवस बैनर तले चल रहा आंदोलन जोर पकड़ता जा रहा है, दो दिन पूर्व मीडिया में आई रिपोर्ट्स के अनुसार अमेरिका के 50 राज्यों के 1600 से अधिक स्थानों पर यह आंदोलन चल रहा है, हालांकि राष्ट्रपति ट्रंप चुनाव में किए गए वादों को स्टेप बाय स्टेप पूरा करने की ओर कदम तीव्रता से बढ़ा रहे हैं,जो काबिले तारीफ है। परंतु मेरा मानना है कि उनके क्रियान्वयन व निर्णय में कुछ खामियां हो सकती है ? उनके मुख्य मुद्दों में टैरिफ व इमीग्रेशन है ।इमीग्रेशन पर अनेक राज्यों के अनेक नागरिक नाराज है, तो टैरिफ मुद्दे पर अब यूरोपीय यूनियन भी अच्छा खासा नाराज़ चल रहा है,व अपने स्तर पर आपस में संधियाँ कर अपनी सभी क्षेत्रों में सुरक्षा का खुद इंतजाम कर रहा है, जिसका सबसे सटीक उदाहरण अभी दो दिन पहले ब्रिटेन जर्मनी में समझौता हुआ व फ्रांस भी इनके साथ है। डोनाल्ड ट्रंप का अमेरिका में अपनी पार्टी सहित, यूरोपीय यूनियन,व दुनियाँ के अनेक देशों में टैरिफ, इमीग्रेशन मुद्दों पर विरोध-लोग सड़कों पर उतरे, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे अमेरिका में ट्रंप के खिलाफ जबरदस्त प्रदर्शन, गुड ट्रबल लाइव नामक विरोध आंदोलन,50 राज्यों के 1600जगहों पर जबरदस्त आंदोलन,घर में गिरे ट्रंप- लोकप्रियता व अप्रूवल रेटिंग में भारी गिरावट।

साथियों बात अगर हम अमेरिका में ट्रंप की नीतियों के खिलाफ़ प्रदर्शनों की करें तो, अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप दुनियाँ भर में ट्रेड और टैरिफ वार छेड़ने के साथ अपने कई अन्य अजीबोगरीब फैसलों के चलते अपने ही देश में घिर गए हैं। गत 2 दिनों से ट्रंप के खिलाफ अमेरिका के विभिन्न शहरों में जोरदार विरोध प्रदर्शन हो रहाहैअमेरिकी जनता ट्रंप की कई नीतियों के विरोध में सड़क पर उतर आई है। पूरे देश में प्रदर्शनकारियों ने ट्रंप प्रशासन और उनकी नीतियों के खिलाफ पोस्टर, बैनर और नारों के साथ अपनी असंतुष्टि जाहिर की है। 'गुड ट्रबल लाइव्स ऑन' नामक विरोध आंदोलन ने देश के सभी 50 राज्यों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। न्यूयॉर्क में प्रदर्शनकारियों को इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट भवन के पास एक चौराहे को अवरुद्ध करते हुए देखा गया। एक विरोध प्रदर्शन के दौरान, जब प्रदर्शनकारी एक इमिग्रेशन कोर्ट के बाहर इकट्ठा हुए तो उन्होंने ट्रंप प्रशासन के खिलाफ 'गुड ट्रबल लाइव्स ऑन' राष्ट्रीय विरोध दिवस के तहत तख्तियां थाम रखी थीं ।ट्रंप के खिलाफ यह प्रदर्शन अटलांटा (जॉर्जिया), सेंट लुइस (मिसौरी), ओकलैंड (कैलिफोर्निया), और एनापोलिस (मैरीलैंड) समेत करीब 1600 जगहों पर हुआ। इसमें ट्रंप प्रशासन की स्वास्थ्य देखभाल में कटौती, इमिग्रेशन नीतियों और अन्य फैसलों की खिलाफत की गई। इसका उद्देश्य दिवंगत कांग्रेस सदस्य और नागरिक अधिकारों के नेता जॉन लुईस को श्रद्धांजलि देना भी।

साथियों बात अगर हम गुड ट्रबल लाइवस ऑन आंदोलन को समझने की करें तो,'गुड ट्रबल' आंदोलन का नाम जॉन लुईस की उस प्रसिद्ध अपील से लिया गया है, जो उन्होंने 2020 में अपनी मौत से पहले अमेरिकी नागरिकों से की थी। उन्होंने कहा था, ₹अच्छी परेशानी में पड़ो, ज़रूरी परेशानी में पड़ो और अमेरिका की आत्मा का उद्धार करो बता दें कि जॉन लुईस 'बिग सिक्स' नागरिक अधिकार कार्यकर्ताओं के समूह के अंतिम जीवित सदस्य थे, जिसका नेतृत्व डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने किया था। लुईस ने हमेशा अहिंसक आंदोलन और न्याय की लड़ाई का समर्थन किया, और यह आंदोलन उनके विचारों की विरासत को आगे बढ़ाता है ।पब्लिक सिटीजन संगठन की सह-अध्यक्ष लीसा गिल्बर्ट ने प्रदर्शन से पहले कहा, ₹हम अपने देश के इतिहास के सबसे भयावह क्षणों में से एक से गुजर रहे हैं। प्रशासन में बढ़ते अधिनायकवाद और अव्यवस्था से हम सभी जूझ रहे हैं, जब हमारे लोकतंत्र के अधिकारों, स्वतंत्रताओं और अपेक्षाओं को चुनौती दी जा रही है ।₹ इस राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य ट्रंप प्रशासन की उन नीतियों और कार्यों के खिलाफ आवाज़ उठाना है जिन्हें कई नागरिक मानवाधिकारों के उल्लंघन और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए खतरा मानते हैं।

साथियों बात अगर हम ट्रंप के टैरिफ नीतियों पर बयानों को लेकर चर्चा होने की करें तो, बहरहाल, अपनी टैरिफ नीतियों पर बयानों को लेकर चर्चा में रहने वाले ट्रंप अमेरिका में कितने लोकप्रिय हैं, इससे जुड़ी एक सर्वे भी सामने आया है। इस खबर के मुताबिक देशवासी बीते छ महीनों की अवधि में ट्रंप की नीतियों को लेकर उतने खुश नहीं हैं। टैरिफ नीति के चलते अमेरिका में महंगाई बढ़ रही है। वहीं ट्रंप सरकार अपने बिग ब्यूटीफुल बिल के जरिए सामाजिक कल्याण योजनाओं में कटौती कर रही है और मेडिकेड सुविधा को भी कम कर रही है। इसके चलते अमेरिका में 1.1 करोड़ लोग स्वास्थ्य बीमा से बाहर हो जाएंगे। ट्रंप की नीतियों के बीच उनकी लोकप्रियता को लेकर हुए सर्वे के मुताबिक इस साल की शुरुआत में अप्रवासन के मुद्दे पर ट्रंप की जो रेटिंग थी, अब उसमें गिरावट आई है। इसके अलावा सरकारी खर्च में कटौती और मेडिकेड जैसे मुद्दों पर लोगों में भारी नाराजगी है ।हाल के सर्वेक्षणों से पता चला है कि राष्ट्रपति ट्रंप का एजेंडा जनता के बीच काफ़ी हद तक अलोकप्रिय है। एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, अधिकांश अमेरिकियों को लगता है कि उनके हस्ताक्षरित घरेलू नीति विधेयक से देश को नुकसान होगा, जेफरी एपस्टीन मामले की फाइलों को संभालने के उनके तरीके से वे असहमत हैं, और बिना दस्तावेज़ वाले अप्रवासियों को उनके अपने देश के अलावा अन्य देशों में निर्वासित करने का विरोध करते हैं। और सीएनएन/एसएसआरएस के एक सर्वेक्षण के अनुसार, अमेरिकियों का एक बढ़ता हुआ हिस्सा यह मानता है कि ट्रंप गलत प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। फिर भी, हालाँकि राष्ट्रपति की कार्य स्वीकृति रेटिंग कम बनी हुई है, पिछले कई हफ़्तों से यह अपेक्षाकृत स्थिर भी रही है ।दुनिया के सबसे चर्चित शख्स और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की लोकप्रियता में चुनाव के बाद काफी कमी आई है अपनी नीतियों और बयानों को लेकर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों का सामना कर रहे ट्रंप की अप्रूवल रेटिंग सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है। 30 जनवरी 2025 को दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति पद को संभालने वाले ट्रंप लोगों के बीच में काफी लोकप्रिय थे लेकिन 5 महीना के उनके कार्यकाल के दौरान हुई फ़ैसलों के कारण अमेरिकियों को अपनी नौकरी गवानी पड़ी और व्यापारियों को भी एक लंबा नुकसान हुआ है ।याहू न्यूज नया गांव सर्वेक्षण के मुताबिक केवल 40 फ़ीसदी अमेरिकी ही राष्ट्रपति ट्रंप को अभी भी पसंद करते हैं जबकि 56 प्रतिशत लोग खुले तौर पर उन्हें ना पसंद करते हैं। आपको बता दें यह सर्वेक्षण ऐसे समय में किया गया है जब अमेरिका में मई के महीने में निजी क्षेत्र में नौकरियों में कटौतियां हुई है पहले डोंगे मिशन और उसके बाद ट्रंप की नीतियों का लोगों ने काफी विरोध किया है इसके अलावा ट्रंप की अवैध प्रवासियों के खिलाफ चल जा रहा है अभियान के तहत पूरे इन मामलों के विरोध में हजारों लोग सभी शहरों में सड़कों पर उतर आए थे इन लोगों को संभालने के लिए ट्रंप को सैनिकों की तैनाती करनी पड़ी थी,ट्रंप की नीतियों के विरोध के चलते उनकी अप्रूव्ड रेटिंग भी उसे उनके सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई है अगर उनके पूर्व भर्ती राष्ट्रपतियों से तुलना करें तो ट्रंप का प्रदर्शनबराक ओबामा और जो बिडेन दोनों से ही खराब रहा है इन दोनों को ही अपने कार्यकाल के पांच महीनों बाद लोगों का बेहतर सपोर्ट मिला था,आपको बता दें मार्च के महीने में ट्रंप के अप्रूवल रेटिंग लगभग 44 फीस दी थी जो एक ही महीने में घटकर 40 पेर्सेंट पर आ गई है वहीं पहले केवल 50 पेर्सेंट प्रतिशत लोगों ने खुलकर नापसंद करते थे वहीं अब यह मात्रा 56 पेर्सेंट हो गई है।

साथियों बात अगर हम यूरोपीय यूनियन देशों में अमेरिका के प्रति अविश्वास व आपसी समझौतों की करें तो, ब्रिटेन और जर्मनी ने गुरुवार (17 जुलाई, 2025) को एक व्यापक मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए, जिससे रक्षा से लेकर परिवहन तक के क्षेत्रों में संबंधों को गहरा किया जा सके, जो चांसलर के रूप में फ्रेडरिक मर्ज़ की पहली लंदन यात्रा को चिह्नित करता है, जो यूरोपीय संघ के साथ ब्रिटेन के संबंधों को फिर से स्थापित करने में मदद करने के लिए नवीनतम यात्रा है ।श्री मर्ज़ की यह एक दिवसीय यात्रा फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की ब्रिटेन की तीन दिवसीय राजकीय यात्रा के बाद हो रही है, जो महाद्वीप के लिए खतरे तथा उनके अमेरिकी सहयोगी के बारे में अनिश्चितता के समय यूरोप की शीर्ष तीन शक्तियों के बीच अधिक सहयोग का संकेत है ।हम रक्षा, विदेश नीति के क्षेत्र में, साथ ही आर्थिक और घरेलू नीति में भी अपने सहयोग को गहरा करना चाहते हैं ।बर्लिन के एसडब्ल्यूपी थिंक-टैंक के निकोलाई वॉन ओंडार्ज़ ने कहा कि ब्रिटेन द्वारा यूरोपीय संघ छोड़ने के लिए मतदान करने के लगभग एक दशक बाद हुई यह संधि, एक ओर तो जर्मनी-ब्रिटिश संबंधों के सामान्य होने का संकेत है। ₹दूसरी ओर, यह संधि इस बात का भी संकेत है कि ट्रान्साटलांटिक अनिश्चितता के कारण ब्रिटेन एक सुरक्षा साझेदार के रूप में और भी महत्वपूर्ण हो गया है ।₹राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के व्हाइट हाउस में लौटने के बाद से यूरोप को नए अमेरिकी टैरिफ का सामना करना पड़ रहा है, साथ ही रूस के आक्रमण के खिलाफ यूक्रेन सहित अपने यूरोपीय सहयोगियों की रक्षा करने की अमेरिकी प्रतिबद्धता पर भी सवाल उठ रहे हैं ।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिका में ट्रंप के खिलाफ़ जबरदस्त प्रदर्शन- गुड ट्रबल लाइव ऑन नमक विरोध आंदोलन-50 राज्यों के 1600 जगहों पर आंदोलन ।घर में घिरे ट्रंप-लोकप्रियता व अप्रूवल रेटिंग में भारी गिरावट ।डोनाल्ड ट्रंप का अमेरिका में अपनी पार्टी सहित, यूरोपीय यूनियन,व दुनियाँ के अनेक देशों में टैरिफ, इमीग्रेशन मुद्दों क़ा विरोध-लोग सड़कों पर उतरे

अगले हफ्ते होगा बड़ा धमाका! MG M9 और 2025 Renault Triber होगी लॉन्च – जानें क्या होंगे फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में दुनियाभर के कई प्रमुख वाहन निर्माताओं की ओर से अपनी कारों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। हर महीने कई नई कारों को भी देश में लॉन्च किया जाता है। जुलाई 2025 के आखिरी हफ्ते में कौन से निर्माताओं की ओर से किन कारों को लॉन्च किया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई वाहन निर्माता अपनी बेहतरीन कारों को ऑफर करते हैं। कई मौजूदा कारों के नए वर्जन को लॉन्च किया जाता है तो कुछ नई कारों को भी हर साल भारत में लॉन्च किया जाता है। जुलाई के आखिरी हफ्ते में कौन सी निर्माता की ओर से कौन सी गाड़ी को लॉन्च किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होंगी दो कारें

21 जुलाई 2025 से शुरू हो रहे हफ्ते में दो वाहन निर्माताओं की ओर से दो कारों को लॉन्च किया जाएगा। इसमें से एक कार मौजूदा कार का अपडेटिड वर्जन होगी और दूसरी कार पूरी तरह से भारतीय बाजार के लिए नई होगी। MG की ओर से M9 को 21 जुलाई को लॉन्च कर दिया जाएगा। वहीं Renault की ओर से भी Triber 2025 को लॉन्च किया जाएगा।

कैसी है MG M9

ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में 21 जुलाई को इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में MG M9 को लॉन्च कर दिया जाएगा। निर्माता की ओर से इस गाड़ी को लग्जरी के साथ छह सीटों के विकल्प के साथ ऑफर किया जाएगा। इसकी संभावित एक्स शोरूम कीमत 60 से 75 लाख रुपये के बीच होगी। इस गाड़ी से ICE सेगमेंट में आने वाली लग्जरी एमपीवी Kia Carnival और Toyota Vellfire के साथ होगा।

Renault Triber 2025 भी होगी लॉन्च

रेनो की ओर से भी एंट्री लेवल एमपीवी के तौर पर Renault Triber 2025 को लॉन्च किया जाएगा। निर्माता की ओर से मौजूदा ट्राइबर में कई बदलाव किए जाएंगे। लेकिन ज्यादातर बदलाव कॉस्मैटिक होंगे। इसके इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसके साथ ही इसके इंटीरियर और एक्सटीरियर में कई ऐसे बदलावों को किया जा सकता है जिससे गाड़ी को फ्रेश लुक मिलेगा। बाजार में इसे सबसे सस्ती एमपीवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इसका बाजार में सीधा मुकाबला Maruti Suzuki Ertiga और Kia Carens के साथ होता है।

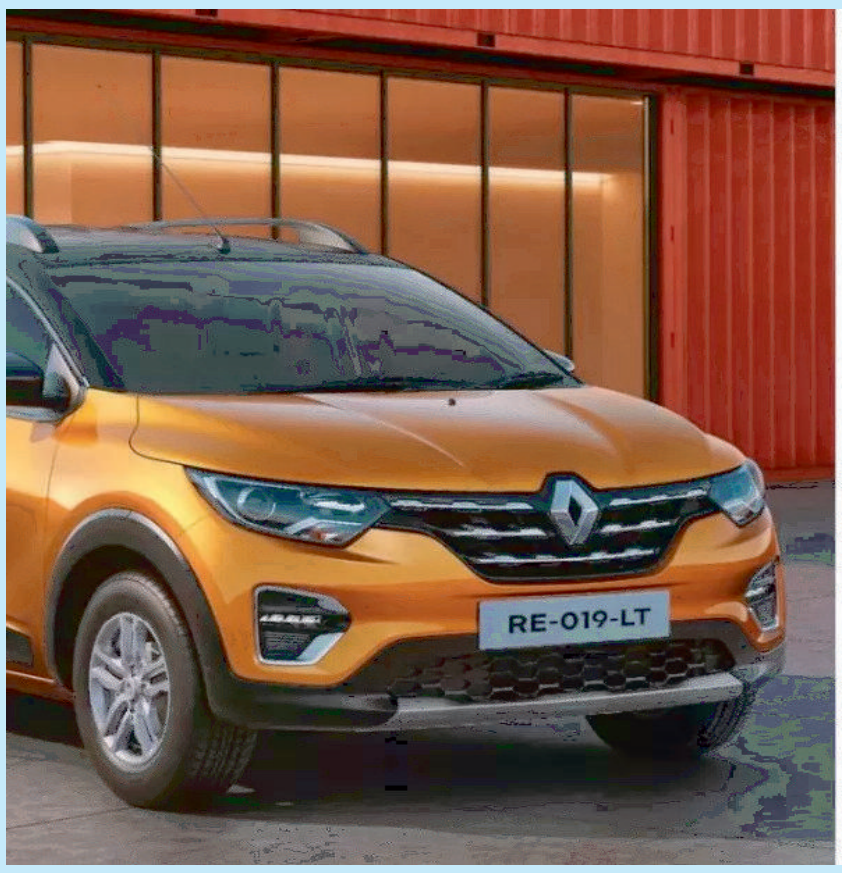

महंगा हो गया टाटा टिआगो को खरीदना, बुक करवाने से पहले जान लें कितनी बढ़ गई कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सबसे सस्ती गाड़ी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Tata Tiago की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। बढ़ोतरी के बाद अब इसकी नई कीमत क्या हो गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से अपनी हैचबैक कार की कीमत में बढ़ोतरी की गई है। निर्माता की ओर से Tata Tiago की कीमत में कितनी बढ़ोतरी की गई है। अब इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। किस वेरिएंट की कीमत को कितना बढ़ाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगी हुई टाटा टिआगो

टाटा मोटर्स की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Tata Tiago की कीमत में बढ़ोतरी कर दी गई है। निर्माता की ओर से इस हैचबैक कार के सभी वेरिएंट्स की कीमतों में बढ़ोतरी नहीं की गई है।

किन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ी

जानकारी के मुताबिक निर्माता की ओर से इसके बेस वेरिएंट की कीमत में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके अलावा बाकी सभी वेरिएंट्स की कीमत में 10 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। जिन वेरिएंट्स की कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है उनमें XE और iCNG शामिल हैं। इनके अलावा जिन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ाई गई हैं उनमें Petrol- XM, XZ+, XZA और CNG में XM, XZ, XZA शामिल हैं।

कुछ वेरिएंट्स की कीमत पांच हजार रुपये तक बढ़ी

कुछ वेरिएंट्स की कीमत में पांच हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। इनमें Petrol- XT, XTA और CNG के XT, XTA शामिल हैं।

कितनी हुई कीमत

कीमतों में बढ़ोतरी के बाद अब Tata Tiago की एक्स शोरूम कीमत पांच लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.55 लाख रुपये तक है।

किनसे है मुकाबला

Tata Tiago को भारतीय बाजार में एंट्री लेवल हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में टाटा टियागो का सीधा मुकाबला Maruti Wagon R, Maruti Celerio, Maruti S Presso, Renault Kwid, Hyundai Grand Nios i10 जैसी कारों के साथ होता है। वहीं कीमत के मामले में इसे Renault Kiger, Nissan Magnite, Tata Punch जैसी सब फोर मीटर एसयूवी से भी कड़ी चुनौती मिलती है।

जुलाई 2025 में होंडा की कारों को खरीदने पर मिलेगा लाखों रुपये का डिस्काउंट, जानें किस पर होगी कितनी बचत

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख कार और एसयूवी ऑफर करने वाली जापानी कंपनी Honda Cars की ओर से July 2025 में अपनी कार और एसयूवी पर हजारों रुपये के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी की ओर से किस कार और एसयूवी को खरीदने पर कितना कैश डिस्काउंट एक्सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में जापानी वाहन निर्माता Honda Cars की ओर से एसयूवी से लेकर सेडान सेगमेंट में कई कारों को ऑफर किया जाता है। अगर आप July 2025 में होंडा की कार खरीदने का मन बना रहे हैं, तो निर्माता की ओर से इस महीने अपनी कारों और एसयूवी पर किस तरह के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Honda Amaze पर क्या है ऑफर

होंडा की ओर से July 2025 में अपनी कॉम्पैक्ट सेडान कार Honda Amaze पर हजारों रुपये के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। निर्माता की ओर से इस महीने इस गाड़ी को खरीदने पर अधिकतम 57200 रुपये के ऑफर मिल रहे हैं। होंडा की ओर से यह ऑफर इसकी दूसरी जेनरेशन के बचे हुए स्टॉक पर दिया जा रहा है। वहीं तीसरी जेनरेशन अमेज पर सिर्फ कॉर्पोरेट और मौजूदा होंडा ग्राहकों के लिए ही ऑफर्स को दिया जा रहा है। Honda Amaze की दूसरी जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 7.62 लाख और तीसरी जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 8.10 लाख रुपये से शुरू हो जाती है।

Honda City भी होगी बचत

होंडा की ओर से मिड साइज सेडान के तौर पर सिटी को ऑफर किया जाता है। July 2025 के दौरान इस कार पर भी कंपनी की ओर से डिस्काउंट ऑफर किए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इस महीने सिटी को खरीदने पर 107300 रुपये का अधिकतम फायदा लिया जा सकता है। यह ऑफर इसके सामान्य मॉडल पर दिया जा रहा है। वहीं सिटी के हाइब्रिड वर्जन Honda City e:HEV पर इस महीने किसी भी तरह के ऑफर नहीं दिए जा रहे हैं। Honda City की एक्स शोरूम कीमत 12.38 लाख रुपये से हो जाती है और इसके हाइब्रिड वर्जन की एक्स शोरूम कीमत 19.90 लाख रुपये से शुरू होती है।

Honda Elevate पर सबसे ज्यादा बचत

होंडा की ओर से साल 2023 में ही Elevate को भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया था। जिसके बाद से ही कंपनी को इस एसयूवी के लिए बेहतरीन प्रतिक्रिया मिल रही है। July 2025 के दौरान अगर आप इस एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं, तो इस महीने में इस एसयूवी कंपनी की ओर से अधिकतम 120100 रुपये का डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। इस एसयूवी की कीमत की शुरूआत 11.91 लाख रुपये से हो जाती है।

कर रहे हैं टाटा हैरियर ईवी को खरीदने की तैयारी, जान लें कब से शुरू होगी एसयूवी की डिलीवरी

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जून 2025 में ही Tata Harrier EV को लॉन्च किया गया है। अगर आप भी इस एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो इसकी डिलीवरी को कब से शुरू करने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से जून 2025 में ही Tata Harrier EV को लॉन्च किया गया है। निर्माता इस एसयूवी के लिए बुकिंग शुरू कर चुकी है। अगर आप भी इसे बुक करवाने के बाद डिलीवरी का इंतजार कर रहे हैं तो टाटा की ओर से इसकी डिलीवरी को कब से शुरू किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कब से शुरू होगी डिलीवरी

Tata Harrier EV के लिए बुकिंग को भी कुछ समय पहले ही शुरू किया गया है। इसके बाद गाड़ी की डिलीवरी भी जल्द शुरू की जाएगी। निर्माता की ओर से जानकारी दी गई है कि वह जुलाई 2025 से एसयूवी की डिलीवरी को शुरू कर देगी।

जून में हुई थी लॉन्च

टाटा की ओर से हैरियर ईवी को तीन जून 2025 को ही लॉन्च किया गया है। निर्माता की ओर से लॉन्च के कुछ समय बाद इसकी बुकिंग को शुरू किया गया है। बुकिंग शुरू होने के 24 घंटे में ही इसके लिए 10 हजार से ज्यादा बुकिंग टाटा मोटर्स को मिल चुकी हैं।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से इलेक्ट्रिक एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें शॉर्क फिन एंटीना, बॉडी कलर्ड बंपर, एलईडी बाई-प्रोजेक्टर हेडलैंप, इंटीग्रेटिड स्पॉयलर, एलईडी डीआरएल, सनरूफ, फ्रंट फॉग लैंप, 26.03 सेमी डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, लेदरेट अपहोल्स्ट्री, एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, ड्यूल जोन एसी, एयर प्यूरीफायर, ऑटो हेडलैंप, क्रूज कंट्रोल, इलेक्ट्रिक टेलगेट ओपनिंग, फॉलो मी हेडलैंप, फ्रंट आर्मरेस्ट, पावर विंडो, पुश बटन स्टॉर्ट/स्टॉप, स्मार्ट की, रेन सेंसिंग वाइपर, रियर एसी वेंट, रियर वाइपर और वाशर, स्टेयरिंग माउंटिड कंट्रोल्स, वेंटिलेटिड सीट्स, वायरलेस चार्जर, एबीएस, ईबीडी, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, सीएससी, सात एयरबैग, ईपीबी, ऑटो होल्ड, ईएसपी, हेडलैंप लेवलिंग, एचडीसी, एचएचसी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, पंचर रिपेयर किट, पार्किंग सेंसर, टीपीएमएस, वायरलेस एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, 31.24 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, छह स्पीकर, चार ट्वीटर ऑडियो सिस्टम जैसे कई फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है रेंज

इसमें 75 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। 627 किलोमीटर की एमआईडीसी रेंज मिलती है। रियल वर्ल्ड रेंज करीब 480 से 505 किलोमीटर तक है। इसके साथ दी गई पीएमएसएम मोटर से इसे 238 पीएस की पावर और 315 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। एसयूवी में ईको, सिटी और स्पोर्ट ड्राइविंग मोड्स के साथ नॉर्मल, वेट और रफ टैरेन जैसे कई मोड्स को भी दिया गया है। एसयूवी को रियर व्हील ड्राइव के साथ ही क्वाड व्हील ड्राइव के विकल्प के साथ भी ऑफर किया जा रहा है।

कितनी है कीमत

टाटा मोटर्स की ओर से हैरियर ईवी की एक्स शोरूम कीमत 21.49 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 30.23 लाख रुपये है।

किनसे है मुकाबला

टाटा की हैरियर ईवी का बाजार में सीधा मुकाबला Hyundai Creta Electric के साथ होता है। इसके अलावा इसे BYD Atto 3 से भी चुनौती मिलती है।

Kinetic Green 28 July को लाएगी करेगी नया Electric Scooter, सोशल मीडिया पर जारी

परिवहन विशेष न्यूज

देश में इलेक्ट्रिक स्कूटर सेगमेंट में लगातार मांग बढ़ रही है। जिसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से नए उत्पादों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहन निर्माता Kinetic Green की ओर से भी 28 जुलाई को नया स्कूटर लाया जाएगा। इसके पहले निर्माता की ओर से टीजर जारी किया गया है। इसमें क्या जानकारी दी गई है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में लगातार इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। जिसे देखते हुए देश और दुनिया के कई वाहन निर्माता नए उत्पादों को पेश और लॉन्च कर रहे हैं। Kinetic Green की ओर से जल्द ही नए स्कूटर को लाया जाएगा। जिसके पहले टीजर जारी किया गया है। इसमें क्या जानकारी दी गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

आएगा नया इलेक्ट्रिक स्कूटर

Kinetic Green की ओर से भारतीय बाजार में नए इलेक्ट्रिक स्कूटर को लाने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 28 जुलाई 2025 को औपचारिक तौर पर इस स्कूटर को बाजार में लॉन्च कर दिया जाएगा।

सोशल मीडिया पर जारी हुआ टीजर

निर्माता की ओर से नए स्कूटर को लाने से पहले इसके टीजर को सोशल मीडिया पर जारी किया है। निर्माता की ओर से स्कूटर के दो टीजर जारी किए गए हैं। जिसमें स्कूटर की थोड़ी सी जानकारी मिल रही है। पहले टीजर में इसके बटन की झलक दिखाई गई है। जिस पर Are You Ready लिखा हुआ है। इसमें से एक बटन लाल रंग में है। वहीं दूसरे टीजर में स्कूटर में K आकार की एलईडी लाइट्स को दिखाया गया है। दोनों में ही Coming Soon लिखा गया है।

रेट्रो लुक में आएगा स्कूटर

निर्माता की ओर से अभी इसकी औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद है कि नए इलेक्ट्रिक स्कूटर को बाजार में रेट्रो लुक के साथ लाया जाएगा। इस स्कूटर को पहले भी इंजन के साथ बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता था। लेकिन कई साल पहले इसे बंद कर दिया गया था।

मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

उम्मीद है कि काइनेटिक के नए इलेक्ट्रिक स्कूटर में निर्माता की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा। इसमें एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, हब माउंटिड मोटर, डिस्क ब्रेक, 30 लीटर के आसपास बूट स्पेस, फ्रंट में भी सामान रखने की जगह को दिया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से अभी स्कूटर की कीमत के बारे में जानकारी नहीं दी गई है। लॉन्च के समय ही इसकी कीमत की सही जानकारी मिल पाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि काइनेटिक ग्रीन के नए इलेक्ट्रिक स्कूटर को 80 हजार रुपये से एक लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के आस पास लॉन्च किया जा सकता है।

एआइ की भूख और रचनात्मकता की उपेक्षा

विजय गर्ग

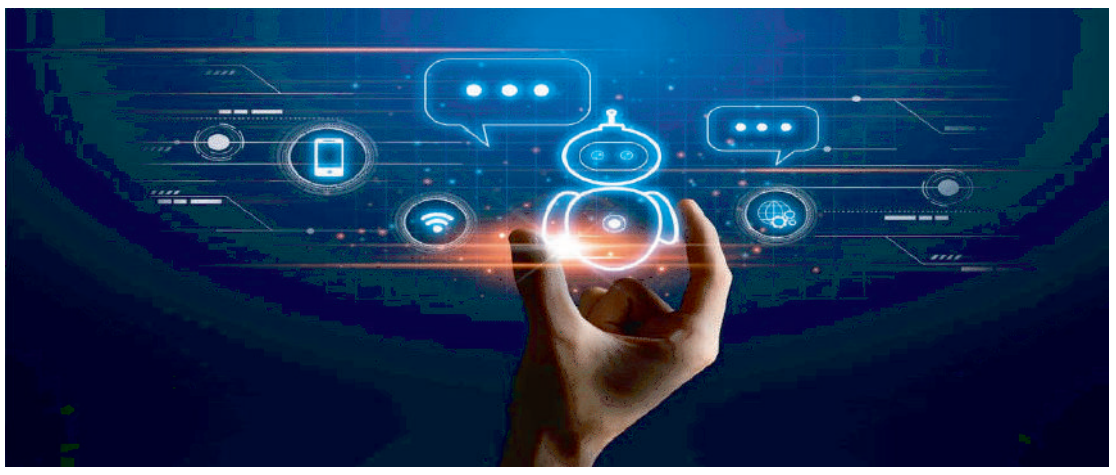

जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नाम पर क्रिएटर्स की बौद्धिक संपदा का उल्लंघन किया जा रहा है। अमेरिका में चल रहे मुकदमे इसकी पुष्टि करते हैं। चैटजीपीटी, क्लाउड, जेमिनी जैसे एआइ टूल बिना अनुमति के किताबें, लेख, समाचार, कविता और फोटो कंटेंट चुराकर उन्हें थोड़े बदलाव के साथ नए रूप में पेश कर रहे हैं। हाल ही में एक कंपनी के खिलाफ दायर मुकदमे में चौंकाने वाली बात सामने आई। लेखकों ने आरोप लगाया कि इस कंपनी ने सात करोड़ किताबों की चोरी की गई। प्रतियों से भरी बुक्स-3 नामक लाइब्रेरी का इस्तेमाल किया। दरअसल ये सभी किताबें बिना अनुमति के डाउनलोड की गई थीं। कंपनी का कहना है कि उन्होंने वैध किताबें खरीदी थीं, जबकि वे चोरी की गई लाइब्रेरी का इस्तेमाल कर रहे थे। जून, 2025 में कोर्ट के फैसले में जज ने उस कंपनी और मेटा दोनों के पक्ष में फैसला सुनाया है। कोर्ट का तर्क है कि यह उचित उपयोग की श्रेणी में आता है,

क्योंकि एआइ ट्रांसफार्मेटिव काम कर रहा है। लेकिन यह तर्क कितना सही है ! ट्रांसफार्मेटिव काम वह होता है जो मूल कंटेंट को नया अर्थ देता है, न कि उसे चुराकर व्यावसायिक लाभ उठाता है।

भारत में भी कई प्रकाशकों ने ओपनएआइ के खिलाफ मुकदमा दायर किया है। उनका आरोप है कि चैटजीपीटी ने बिना अनुमति के भारतीय समाचार और सामग्री का उपयोग किया है। ओपनए आइ का दावा है कि वे केवल तथ्य प्रस्तुत करते हैं। भले ही तथ्य सार्वजनिक हों, लेकिन उनकी प्रस्तुति, भाषा और संदर्भ निर्माता की बौद्धिक संपदा है। समस्या यह है कि भारत के कापीराइट अधिनियम 1957 में एआइ के लिए स्पष्ट प्रविधान नहीं हैं। इसी कमजोरी का फायदा प्रौद्योगिकी कंपनियां उठा रही हैं। समय का तकाजा है। कि हमारे नीति निर्माताओं को इस दिशा में तुरंत कदम उठाने चाहिए।

सच्चाई यह है कि एआइ कंपनियां अरबों डालर का मुनाफा कमा रही हैं, लेकिन जिन रचनाकारों के काम पर यह कारोबार फलफूल रहा है, उन्हें फूटी कौड़ी भी नहीं मिल रही। यह अन्याय ही नहीं, बल्कि क्रिएटर्स की आजीविका पर भी हमला है।

एआइ कंपनियों को क्रिएटर्स से लाइसेंस लेने की जरूरत है। जैसे म्यूजिक कंपनियां कलाकारों को रायल्टी देती हैं, वैसे ही इन कंपनियों को भी करना चाहिए। अगर वे वाकई बदलावकारी काम कर रही हैं, तो उन्हें फीस देने में क्या दिक्कत है? सरकारों को कापीराइट कानून बदलने चाहिए। तकनीक के नाम पर चोरी को जायज नहीं ठहराया जा सकता। अगर क्रिएटर्स की कीमत पर एआइ का विकास किया जा रहा है, तो यह गलत दिशा में जा रहा है। उपभोक्ताओं को भी जागरूक होना चाहिए। जब आप एआइ टूल्स का उपयोग करते हैं तो समझ लें कि इसके पीछे लाखों लेखकों और पत्रकारों की मेहनत है। तकनीकी विकास मानवीय मूल्यों के खिलाफ नहीं होना चाहिए ।

एआइ की भूख और रचनात्मकता की उपेक्षा

जेनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नाम पर क्रिएटर्स की बौद्धिक संपदा का उल्लंघन किया जा रहा है। अमेरिका में चल रहे मुकदमे इसकी पुष्टि करते हैं। चैटजीपीटी, क्लाउड, जेमिनी जैसे एआइ टूल बिना अनुमति के किताबें, लेख, समाचार, कविता और फोटो कंटेंट चुराकर उन्हें थोड़े बदलाव के साथ नए रूप में पेश कर रहे हैं। हाल ही में एक कंपनी के खिलाफ दायर मुकदमे में चौंकाने वाली बात सामने आई। लेखकों ने आरोप लगाया कि इस कंपनी ने सात करोड़ किताबों की चोरी की गई। प्रतियों से भरी बुक्स-3 नामक लाइब्रेरी का इस्तेमाल किया। दरअसल ये सभी किताबें बिना अनुमति के डाउनलोड की गई थीं। कंपनी का कहना है कि उन्होंने वैध किताबें खरीदी थीं, जबकि वे चोरी की गई लाइब्रेरी का इस्तेमाल कर रहे थे। जून, 2025 में कोर्ट के फैसले में जज ने उस कंपनी और मेटा दोनों के पक्ष में फैसला सुनाया है। कोर्ट का तर्क है कि यह उचित उपयोग की श्रेणी में आता है,

क्योंकि एआइ ट्रांसफार्मेटिव काम कर रहा है। लेकिन यह तर्क कितना सही है ! ट्रांसफार्मेटिव काम वह होता है जो मूल कंटेंट को नया अर्थ देता है, न कि उसे चुराकर व्यावसायिक लाभ उठाता है।

भारत में भी कई प्रकाशकों ने ओपनएआइ के खिलाफ मुकदमा दायर किया है। उनका आरोप है कि चैटजीपीटी ने बिना अनुमति के भारतीय समाचार और सामग्री का उपयोग किया है। ओपनए आइ का दावा है कि वे केवल तथ्य प्रस्तुत करते हैं। भले ही तथ्य सार्वजनिक हों, लेकिन उनकी प्रस्तुति, भाषा और संदर्भ निर्माता की बौद्धिक संपदा है। समस्या यह है कि भारत के कापीराइट अधिनियम 1957 में एआइ के लिए स्पष्ट प्रविधान नहीं हैं। इसी कमजोरी का फायदा प्रौद्योगिकी कंपनियां उठा रही हैं। समय का तकाजा है। कि हमारे नीति निर्माताओं को इस दिशा में तुरंत कदम उठाने चाहिए।

सच्चाई यह है कि एआइ कंपनियां अरबों डालर का मुनाफा कमा रही हैं, लेकिन जिन रचनाकारों के काम पर यह कारोबार फलफूल रहा है, उन्हें फूटी कौड़ी भी नहीं मिल रही। यह अन्याय ही नहीं, बल्कि क्रिएटर्स की आजीविका पर भी हमला है।

एआइ कंपनियों को क्रिएटर्स से लाइसेंस लेने की जरूरत है। जैसे म्यूजिक कंपनियां कलाकारों को रायल्टी देती हैं, वैसे ही इन कंपनियों को भी करना चाहिए। अगर वे वाकई बदलावकारी काम कर रही हैं, तो उन्हें फीस देने में क्या दिक्कत है? सरकारों को कापीराइट कानून बदलने चाहिए। तकनीक के नाम पर चोरी को जायज नहीं ठहराया जा सकता। अगर क्रिएटर्स की कीमत पर एआइ का विकास किया जा रहा है, तो यह गलत दिशा में जा रहा है। उपभोक्ताओं को भी जागरूक होना चाहिए। जब आप एआइ टूल्स का उपयोग करते हैं तो समझ लें कि इसके पीछे लाखों लेखकों और पत्रकारों की मेहनत है। तकनीकी विकास मानवीय मूल्यों के खिलाफ नहीं होना चाहिए ।

खाद्य पदार्थों और रसायनों में कार्बन डाइऑक्साइड का कृत्रिम रूपांतरण दुनिया को बदल सकता है।

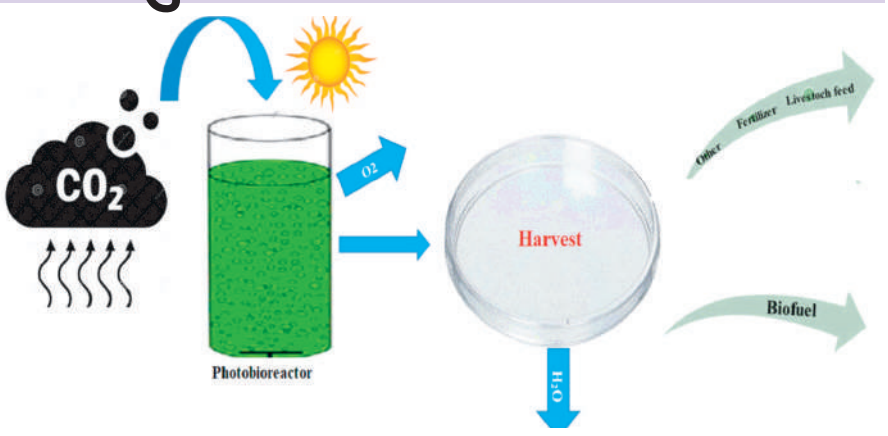

विजय गर्ग

एक उल्लेखनीय वैज्ञानिक सफलता में, चीनी शोधकर्ताओं ने गन्ना या चीनी बीट उगाने की आवश्यकता को दरकिनार करते हुए मेथनॉल को सफेद चीनी में बदलने के लिए एक विधि विकसित की है। बायोट्रांसफॉर्मेशन सिस्टम का उपयोग करते हुए, टीम का दावा है कि कैप्चर की गई कार्बन डाइऑक्साइड को भोजन में परिवर्तित किया जा सकता है।

तियानजिन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल बायोटेक्नोलॉजी की टीम ने इन विट्रो बायोट्रांसफॉर्मेशन सिस्टम विकसित किया है जो मेथनॉल से सुक्रोज को संश्लेषित करता है, एक कम कार्बन रसायन जो औद्योगिक अपशिष्ट या कार्बन डाइऑक्साइड से प्राप्त होता है। मेथनॉल को बदलने के लिए एंजाइमों का उपयोग करके, शोधकर्ताओं ने पारंपरिक कृषि के लिए एक स्थायी विकल्प प्रस्तुत किया है। खाद्य और रसायनों में कार्बन डाइऑक्साइड का कृत्रिम रूपांतरण कार्बन तटस्थता में योगदान करते हुए पर्यावरण और जनसंख्या से संबंधित दोनों चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक आशाजनक रणनीति प्रदान करता है,

डालियान इंस्टीट्यूट ऑफ केमिकल फिजिक्स में वैज्ञानिकों के काम पर बनाए गए तियानजिन शोधकर्ताओं ने 2021 में कार्बन डाइऑक्साइड को मेथनॉल में बदलने के लिए कम तापमान वाली विधि विकसित की।

दक्षिण चीन मॉर्निंग पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, टीम 86 प्रतिशत की प्रभावशाली रूपांतरण दर प्राप्त करने में कामयाब रही, जो बायोमैन्यूफैक्चरिंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। सिस्टम न केवल सुक्रोज को संश्लेषित करता है, बल्कि पारंपरिक तरीकों की तुलना में कम ऊर्जा का उपयोग करके स्टार्च भी पैदा करता है। ₹इन विट्रो बायोट्रांसफॉर्मेशन टिकाऊ बायोमैन्यूफैक्चरिंग के लिए एक अत्यधिक आशाजनक मंच के रूप में उभरा है। इस काम में, हमने कम कार्बन अणुओं से सुक्रोज संश्लेषण के लिए एक प्रणाली को सफलतापूर्वक डिजाइन और कार्यान्वित किया, ₹शोधकर्ताओं ने कहा।

प्रारंभिक सफलता के आधार पर, शोधकर्ताओं ने विभिन्न प्रकार के यौगिकों को परिवर्तित करने के लिए ivBT प्रणाली को अनुकूलित किया, जिसमें फ्रुक्टोज, एमिलोज, एमिलोपेक्टिन, सेलोबायोस और सेलोलिगोसैकराइड्स शामिल हैं।

अत्यधिक CO2 उत्सर्जन के कारण वैश्विक सतह का तापमान कम से कम 1.1 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है। सदी के अंत तक वैश्विक आबादी के 10 बिलियन तक बढ़ने की उम्मीद के साथ, भोजन की मांग दोगुनी होने की उम्मीद है।

हालांकि, कार्बन डाइऑक्साइड की रासायनिक कमी ने विभिन्न रसायनों के स्थायी जैव संश्लेषण के लिए पकड़े गए ग्रीनहाउस गैस को कच्चे माल के रूप में उपयोग करने की संभावना को खोल दिया है।

रीतियाँ रह गईं पीछे, रील्स हो गईं आगे

- [आस्था बनाम इंस्टाग्राम: किस ओर जा रही है हमारी पहचान?]
- [भक्ति से ब्रांडिंग तक: हमारी बदलती सांस्कृतिक धारा]

पहले त्योहारों की आत्मा रसोई में माँ के हाथों की मिठास, मंदिर की घंटियों की मधुर झंकार और परिवार के ठहाकों की गर्मजोशी में पलती थी। वह दौर था जब दीपावली की दीपशिखा दिलों में रोशनी बिखेरती थी और करवा चौथ की थाली अटूट प्रेम का आईना हुआ करती थी। मगर आज, यह आत्मा इंस्टाग्राम की रील्स, प्रोफेशनल फोटोशूट्स और थीम-बेस्ड इवेंट्स की चमक-दमक में कहीं गुम सी हो गई है। दीपों की जगमगाहट अब लाइक्स की गिनती में सिमटती जा रही है, और करवा चौथ की थाली सोशल मीडिया की क्षणिक स्टोरी बनकर रह गई है। सवाल यह नहीं कि हम त्योहार मना रहे हैं या नहीं, सवाल यह है कि क्या हम उनकी गहराई को जी रहे हैं, या बस एक सांस्कृतिक नाटक का मंचन कर रहे हैं? क्या हमारी संस्कृति अब केवल दिखावे की चकाचौंध है, या उसमें अभी भी वह आत्मीयता और आध्यात्मिकता बाकी है जो हमें पीढ़ियों से एकसूत्र में बांधती आई है?

हमारी संस्कृति की नींव हमेशा उसकी भावनात्मक और आध्यात्मिक गहराई रही है। त्योहार महज रस्मों का नाम नहीं थे; वे थे एक सामूहिक उत्साह, जो प्रेम, एकता और कृतज्ञता के रंगों से जीवन को रंग देता था। मिसाल के तौर पर, दीपावली सिर्फ दीप जलाने का पर्व नहीं थी; वह थी अंधकार पर उजाले की विजय और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक। लेकिन आज, 2023 के एक सर्वे (प्यू रिसर्च सेंटर) के मुताबिक, भारत में 68% युवा अपने त्योहारों को सोशल मीडिया पर साझा करते हैं, जिनमें से 43% इसे तैयार करने में घंटों खर्च करते हैं। यह आंकड़ा बताता है कि त्योहार अब उत्सव कम, सोशल मीडिया की 'पोस्ट' ज्यादा बन गए हैं।

बात सिर्फ दीपावली या करवा चौथ तक सीमित नहीं है। नवरात्रि, जो कभी माँ दुर्गा की अराधना और आत्मिक शुद्धि का पवित्र समय था, अब थीम-आधारित गरबा नाइट्स, डिज़ाइनर डांडिया स्टिक्स और इंस्टाग्राम-परफेक्ट पलों की दौड़ में बदल चुकी है। एक अनुमान के अनुसार, 2024 में भारत में गरबा इवेंट्स का बाजार 5000 करोड़ रुपये से अधिक का हो चुका है। ये आंकड़े हमें यह सवाल उठाने पर मजबूर करते हैं कि क्या हमारी भक्ति अब बाजार की चमक-दमक में दब गई है? क्या हम मंदिर में माँ के चरणों में शीश झुकाने जाते हैं, या बस एक और वायरल रील की खोज में हैं?

यह बदलाव केवल सतह पर नहीं रुका; यह हमारे सामाजिक ताने-बाने को भीतर तक प्रभावित कर रहा है। पहले त्योहार रिश्तों में गर्माहट और अपनापन लाते थे; आज वे एक चमकदार प्रतिस्पर्धा का रूप ले चुके हैं। सबसे शानदार पंडाल कौन सा? सबसे ट्रेंडी सजावट किसकी? किसकी दिवाली पार्टी में सबसे ज्यादा भीड़? यह होड़ न सिर्फ हमारी भावनाओं को दिखावे की चादर ओढ़ा रही है, बल्कि हमारी नई पीढ़ी को भी गलत राह दिखा रही है। बच्चे अब होली के रंगों का आध्यात्मिक मोल नहीं समझ रहे; उनकी नजर इस बात पर है कि कौन सा रंग कैमरे में ज्यादा चटक दिखेगा। 2022 के एक अध्ययन के मुताबिक, 10-14 साल के 56% बच्चे त्योहारों को "फोटो अपॉर्च्युनिटी" मानते हैं, न कि आध्यात्मिक अनुभव। यह बदलाव हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को जी रहे हैं, या उसे बस एक सोशल मीडिया पोस्ट में समेट रहे हैं?

यह सांस्कृतिक बदलाव केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामुदायिक स्तर पर भी गहरे निशान छोड़ रहा है। कभी गाँवों और मोहल्लों में त्योहार एक सामूहिक उल्लास का प्रतीक थे, जहाँ अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा, बिना भेदभाव के एकसाथ झूमता था। आज, बड़े शहरों में ये त्योहार टिकटेड इवेंट्स में सिमट गए हैं, जहाँ प्रवेश के लिए मोटी रकम और स्टेटस की अनिवार्यता ने सामाजिक समरसता को किनारे कर दिया। मिसाल के तौर पर, दिल्ली और मुंबई

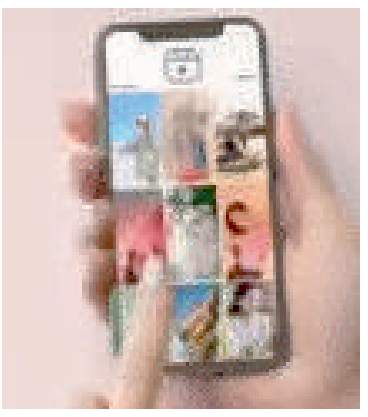

जैसे महानगरों में प्रीमियम गरबा नाइट्स के टिकट 5000 रुपये से शुरू होते हैं। यह बदलाव एक कड़वा सवाल हमारे सामने रखता है—क्या हमारी संस्कृति अब केवल उन लोगों की बपौती बनकर रह गई है जो इसे "खरीद" सकते हैं?

इस चकाचौंध के बीच हमारी संस्कृति की आत्मा कहीं गुम होती जा रही है। संस्कृति कभी महज रस्मों, चमकदार लहंगों या लजीज व्यंजनों का नाम नहीं थी। वह थी वह जीवंत शक्ति, जो हमें हमारी जड़ों, हमारे मूल्यों और हमारी पहचान से जोड़ती थी। वह हमें सिखाती थी कि सच्ची खुशी सादगी में बसती है, कि भक्ति दिखावे का मुखौटा नहीं, दिल से उमड़ने वाला भाव है। मगर आज, जब पूजा की थाली का हर सामान ब्रांडेड हो गया है, और हर रस्म एक फोटोशूट का हिस्सा बन गई है, तो क्या हम उस आत्मा को सचमुच जी पा रहे हैं?

यह रुझान हमें एक खतरनाक दोराहे पर लाकर खड़ा कर रहा है। अगर हमने अपनी संस्कृति को महज प्रदर्शन बनने दिया, तो वह धीरे-धीरे खोखली हो जाएगी। हमारी अगली पीढ़ी को विरासत में सिर्फ फ़िल्टर और फ्रेम्स मिलेंगे, न कि वह भावनात्मक गहराई जो हमें एक-दूसरे से जोड़ती है। संस्कृति कोई मंचीय नाटक नहीं, जिसे तालियों की गड़गड़ाहट के बाद भुला दिया जाए। यह वह अमूल्य धरोहर है, जो पीढ़ियों को एकसूत्र में बांधती है, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़े रखती है।

हल यह नहीं कि हम सोशल मीडिया को त्याग दें या आधुनिकता से मुँह मोड़ लें। जरूरत है एक संतुलन की, जहाँ हम अपनी संस्कृति को फिर से उसका मूल स्वरूप लौटाएँ। हमें अपने बच्चों को सिखाना होगा कि दीप जलाना केवल इंस्टाग्राम की पोस्ट नहीं, बल्कि भीतर के अंधेरे को उजाले से भरने का प्रतीक है। हमें समझाना होगा कि करवा चौथ का व्रत साड़ी और मेकअप की चमक से कहीं ज्यादा प्रेम और समर्पण की कहानी है। हमें अपने त्योहारों को फिर से जीवंत करना होगा—न कि उन्हें एक चमचमाते इवेंट में तब्दील होने देना होगा। आइए, अपनी संस्कृति को सिर्फ स्टेज पर नहीं, दिलों में उतारें, ताकि वह हमारी पहचान को पीढ़ियों तक संजोए रखे।

इसके लिए हमें अपने अंतर्मन में झांकना होगा। हमें खुद से सवाल करना होगा—क्या हम अपनी संस्कृति को सचमुच जी रहे हैं, या बस उसका एक चमकदार मुखौटा दुनिया को दिखा रहे हैं? हमें अपनी नई पीढ़ी को यह सिखाना होगा कि त्योहारों का असली रस चकाचौंध और शोर-शराबे में नहीं, बल्कि अपनों के साथ बिताए अनमोल पलों, भक्ति की गहराई और साझा हर्षोल्लास में छिपा है। हमें अपनी संस्कृति को कैमरे के लेंस से नहीं, बल्कि दिल की गर्माहट से देखना होगा।

अगर हम ऐसा नहीं करते, तो हमारी संस्कृति एक दिन म्यूजियम की शोभा बढ़ाने वाली वस्तु बनकर रह जाएगी—बाहर से चमकदार, लेकिन भीतर से निर्जन। अब हमें यह तय करना है कि हम अपनी संस्कृति को एक सतही प्रदर्शन बनने दें, या उसे उसकी मूल भावना के साथ जीवंत रखें। यह वक्त है अपनी जड़ों की ओर लौटने का, जहाँ त्योहार महज मंचन नहीं, बल्कि जीवन का उमंग भरा उत्सव थे। क्योंकि सच्ची संस्कृति वह नहीं जो केवल दिखती है; वह है जो दिल से जिया जाता है, जो पीढ़ियों को जोड़ता है, और जो हमें हमारी पहचान से बांधे रखता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

रसोई तो है पर वो सुगन्ध कहां गई

विजय गर्ग

रसोई से उठती और हवाओं में घुलती हलवे की खुशबू और कढ़ी के छौंक की सुवास नाक भूलती ही जा रही है। सिलबट्टे की ताजा चटनियों को सॉस की बोतलें निगल गई हैं। अपने लहसुन-अदरक अब जिंजर-गारलिक पेस्ट बन चुके हैं। घर पर बने पापड़-मंगोड़ी तो मानो पानी भरने चले गये हैं।

रसोई अब महकती नहीं, चमकती है। वहां घी-तेल में हींग-जीरा नहीं छौंका जाता, बस ग्रेनाइट पोंछा जाता है। चूल्हे की जगह इंडक्शन है, रोटी की जगह जैम और टोस्ट है। स्वाद की जगह कैलरी की गिनती है। पहले रसोई पकाने के लिये हुआ करती और अब दिखाने के लिये। आज की रसोई को चौका नहीं कह सकते क्योंकि अब वह स्टाइलिश, मॉड्यूलर और ब्रांडेड हो चुकी है। इनमें पेट की बजाय पोस्ट के लिये डिश पकती हैं।

रसोई में खाने से ज़्यादा बहाने बनते हैं- आज बहुत थक गई थी, ज़ूम कॉल पर थी। अब यह सुनने में नहीं आता कि अरे बहू आज क्या बनाया है? बहूरानी तो बस आर्डर करती है, शैफ बनाता है और स्वीगी ले आता है। नतीज़ा यह हुआ कि डिलीवरी ब्वाय घर का सदस्य बन गया है। रसोई में अब प्यार नहीं बस डाइट चार्ट टंगे हैं। और चीनी या नमक जो कभी ज़्यादा हो जाया करता था, आज वह रिश्ता फीका हो गया है।

पहले अचार के मर्तबान तक धूप में बैठते थे और अब मां के पास बच्चों के पास बैठने का ही वक्त नहीं बचा। एक मां वह थी जो बच्चों की दाल की कटोरी में अपने हाथ से घी तिरा दिया करती। अब उसके होते हुए रसोई में पड़ा अदरक सूखकर इतिहास बन जाता है। प्याज तो अब भी कटता है पर आंखें अब प्याज-रस से नहीं बल्कि ओटीटी या नेटफ्लिक्स के ड्रामे से नम होती हैं।

जिस रसोई में कभी प्यार घुलता था, वहां अब प्रोटीन पाउडर घुलता है। अब मिर्च-मसालों की बातें नहीं चलती, मिक्सी चलती है। पहले ताजा मसाले महकते थे, अब फ्रिज पैक्ड मसालों से लदा है। रसोई भरी पड़ी है पर रिश्ते भूखे हैं। अब बहू-बेटियां मां या सासू मां से कुछ नहीं सीखती, इंटरनेट से सीखकर बनाती हैं। पहले मेहमानों के आने की सूचना मिलते ही रसोई चहकने लगती थी, सत्तर भांत के पकवान बनते थे। अब रेस्टोरेंट की सूची बनती है कि किस जगह मेहमानों को लंच-डिनर करवायेंगे।

बच्चा होने का समय नहीं: स्कूली बच्चों के अतिभारित जीवन के अंदर

विजय गर्ग

कई शहरी स्कूल जाने वाले बच्चों की नई दिनचर्या में आपका स्वागत है, एक कार्यक्रम जो काम करने वाले पेशेवरों को दर्पण करता है, यदि अधिक मांग नहीं है। विशेष रूप से मेट्रो शहरों में स्कूलों की बढ़ती संख्या ने शैक्षणिक कठोरता, पाठ्येतर मांगों और कामकाजी माता-पिता की सुविधा के साथ तालमेल रखने के लिए अपने परिचालन घंटे बढ़ा दिए हैं। लेकिन किस कीमत पर?

वे सुरक्षित हैं, लेकिन क्या लागत पर? कई कामकाजी माता-पिता के लिए, लंबे समय तक एक आशीर्वाद है। एक विपणन कार्यकारी और मालोट में कक्षा 4 की छात्रा श्रीमती शर्मा कहती हैं, ₹ईमानदारी से, यह मुझे यह जानकर मन की शांति देता है कि वह काम पर रहते हुए सुरक्षित वातावरण में है। स्कूल आज खेल, गतिविधियों, यहां तक कि भोजन की पेशकश करते हैं। यह दूसरे घर की तरह है."

लेकिन घर पर रहने वाले माता-पिता या अपने बच्चों की दिनचर्या में शामिल लोगों के लिए, यह एक अलग कहानी है।

बेंगलुरु की एक गृहिणी मीना, दृढ़ता से असहमत हैं: ₹हमारे बच्चे मशीनें नहीं हैं। मेरा बेटा सुबह 7 बजे घर से निकलता है और शाम 5:30 बजे के करीब लौटता है। फिर ट्यूशन और होमवर्क। कोई डाउनटाइम नहीं है, कोई मुफ्त खेल नहीं है, कोई भी दिन उन सभी चीजों को नहीं देखता है जो वास्तव में एक बच्चे की कल्पना को ईंधन देते हैं। यह मेरा दिल तोड़ देता है।

1990 के दशक में, अधिकांश स्कूल सुबह 8 बजे शुरू हुए और 1:30 या 2 बजे तक लिपटे रहे। बच्चे घर आए, एक उचित दोपहर का भोजन किया, और अक्सर एक पवित्र अनुष्ठान में लिप्त थे जो आज दोपहर की झपकी से लगभग विलुप्त हो गया है। डॉ. बाल चिकित्सा मनोवैज्ञानिक वंदना सूद कहती हैं, ₹वे झपकी सिर्फ भोगने वाले नहीं थे - वे जैविक रूप से फायदेमंद थीं। बाकी बच्चों को भावनाओं को विनियमित करने, सीखने को मजबूत करने और तनाव को कम करने में मदद की। आज की हाई-स्पीड रूटीन उन्हें रीसेट करने से इनकार करती है।"

उल्लेख नहीं करने के लिए, स्कूल के बाद के घंटे एक बार असंरचित खेल, टीवी समय, या दादा दादी के दौरे से भर गए थे, सभी सामाजिक सीखने के लिए आवश्यक है ।

बच्चों की गति से बढ़ रही है शिक्षक और परामर्शदाता अब प्राथमिक ग्रेड में भी छात्रों के बीच सामाजिक चिंता, चिड़चिड़ापन और भावनात्मक बर्नआउट में स्पाइक की रिपोर्ट करते हैं। ₹बच्चों को अधिक वापस ले लिया जाता है, कुछ समूह गतिविधियों के दौरान चिंता के संकेत दिखाते हैं। दिल्ली के एक स्कूल काउंसलर ने कहा, ₹हम अक्सर उन बच्चों को देखते हैं जो सिर्फ स्कूल ब्रेक के दौरान सोना चाहते हैं या अकेले रहना चाहते हैं।"

शिक्षकों ने क्या कहा स्कूल, अपनी ओर से, ₹समग्र₹ होने के रूप में विस्तारित घंटों की रक्षा करते हैं। कई स्कूल लंबे समय तक बचाव करते हैं, यह तर्क देते हुए कि यह उन्हें समग्र सीखने की पेशकश करने की अनुमति देता है - जिसमें रोबोटिक्स, योग, कोडिंग और प्रदर्शन कला - कार्यक्रम शामिल हैं जिन्हें अतीत के छोटे शेड्यूल में समायोजित करना मुश्किल था।

इस बहस में अक्सर जो गायब होता है वह खुद बच्चों की आवाज है। जबकि कुछ दोस्तों के साथ गतिविधियों और समय का आनंद लेते हैं, कई बस समाप्त हो जाते हैं। संरचित दिन सहजता के लिए थोड़ा कमरा छोड़ देते हैं, कुछ ऐसा जो हर बच्चा हकदार है।

संतुलन के लिए आवश्यक है माता-पिता, शिक्षकों और नीति निर्माताओं को रोकने और पूछने की आवश्यकता है: क्या हम अच्छी तरह से गोल, भावनात्मक रूप से लचीला बच्चों को उठा रहे हैं, या केवल उन्हें वयस्क कार्यक्रम में फिट होने के लिए प्रशिक्षण दे रहे हैं? शायद यह बचपन की लय को फिर से देखने का समय है जहां स्कूल आकाश में सूरज की रोशनी के साथ समाप्त होता है, और जीवन कक्षाओं के बाहर, मिट्टी के गड्ढों, कहानियों की किताबों और siestas में जारी है ।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर

सुखबीर-मजीठीया की जुगल जोडी.....वो भी क्या दिन थे!

अर्जुन शर्मा

वो दिसंबर 2011 के आखरी हफ्ते की बेहद सर्द सवेर थी। मैं उन दिनों जगबाणी टीवी के संपादकीय कोर ग्रुप का महत्वपूर्ण सदस्य था। ग्रुप द्वारा मुझे आगामी विधानसभा चुनाव के दृष्टिगत पंजाब के समस्त बड़े सियासी चेहरों के साक्षात्कार करने का जिम्मा सौंपा गया था। उस सर्द सवेर को हम मालवा के चर्चित सियासी गांव बादल में थे। ये वो दौर था जब मनप्रीत बादल अकाली दल से बागी होकर पंजाब पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) बना चुके थे व मुझे उस दिन बादल गांव में मनप्रीत बादल का इंटरव्यू करना था। जब हम उनके धुंध से भरे घर पहुंचे तो पता चला कि किसी जरूरी काम से मनप्रीत सिंह बादल तो सुबह ही कहीं चले गए थे। सो उनके पिता गुरदास बादल हमें घर पर मिले। मैंने तुरंत उनसे बातचीत करने का मन बनाया। बापू जी इंटरव्यू देने को सहर्ष तैयार हो गए।

बातचीत के क्रम में उनके द्वारा कहीं गई कछ बातों का संबंध पंजाब की मौजूदा अकाली सियासत में प्रासंगिक है। उन्होंने बातचीत के दौरान मनप्रीत बादल के अकाली दल से अलग होने की वजह बिक्रमजीत सिंह मजीठीया को बताया था। लगभग आधे घंटे की रिकार्डिड इंटरव्यू के दौरान उन्होंने न तो अपने बड़े भाई प्रकाश सिंह बादल के बारे में कोई कड़वा शब्द बोला और न हीं सुखबीर बादल के खिलाफ। वे मनप्रीत व सुखबीर को अलग अलग रास्तों पर चलने को मजबूर करने की जिम्मेवारी के टोकरे भर भर कर मजीठीया के सर पर फोड़ते रहे। उन्होंने बेहद भावुक होते हुए कहा था, "ये सुखबीर बहुत भोला है जो बातों में आकर अपने भाई मनप्रीत के खिलाफ हो गया है। देख लेना दोनों भाईयों को अलग करने का मतलब है बादल परिवार की सियासी ताकत को कमजोर कर देना। बड़े बादल साहिब के आंखें बंद करते ही मजीठे वाले अपना असली रंग दिखाएंगे। ये सुखबीर को सियासत के चक्रव्यूह में घेर कर अकाली दल पर कब्जा करेंगे।"

इस इंटरव्यू के प्रसारण को लाखों हिट्स मिले व चुनावी दौर में गुरदास बादल साहिब की इंटरव्यू बेहद चर्चित हुई। तब मेरी लिस्ट में बिक्रमजीत मजीठा का इंटरव्यू करना नहीं था पर मुझे लगा कि गुरदास बादल साहिब की बातों के जवाब बिक्रमजीत सिंह मजीठीया से लिए जाएं तो काफी रोचक होगा। प्रबंधन में मेरी राय को मान्यता दी गई व मैने मजीठीया को जिला तरनतारन के ऐतिहासिक गांव पौहविंड में जा घेरा। वे चुनावी रैली को संबोधित करने आए थे। वे भी बात करने को राजी हो गए। मैने वहां एक शांत से घर में उनसे बातचीत की। जब मैंने गुरदास बादल साहिब द्वारा उन पर लगाए आरोपों से संबंधित सवाल किया तो वे खामोश हो गए व मुझे दो मिनट रुकने का इशारा किया। अपने मनोवस्था पर नियंत्रण पाकर उन्होंने सारे आरोपों के जवाब में केवल इतना ही कहा " देखिए, वे मेरी बहन के ससुराल परिवार के एक सम्माननीय शख्स हैं। हमने उस घर में अपनी लड़की दी है इसलिए मैं उनकी किसी बात का कोई भी जवाब नहीं दे सकता। वे मेरे बड़े हैं, मैं सदा उनका सम्मान करता रहूंगा।"

ये दोनों साक्षात्कार प्रसारित हुए। इनकी बहुत सी प्रतिक्रियाएं भी आईं पर उसके बाद मुझे एक बार ऐसा महसूस हुआ कि तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल भी अपने भाई द्वारा व्यक्त की गई आशंका से कुछ हद तक सहमत थे। ये 2012 या 13 जनवरी को जालंधर में हुए एन.आर.आई सम्मेलन के दौरान की बात है। मुख्यमंत्री समारोह के उदघाटन के लिए बाठ कैसल में आए व उन्होंने स्टेज पर खड़े होते ही जनता में बैठे तीन चार पुराने अकाली नेताओं की तरफ देखते हुए कहा " क्यों भाई साथियों, हमने अकाली दल के लिए कितनी कुर्बानियां दी हैं व जेलें काटी हैं। तब जाकर पार्टी स्थापित हुई व हम सरकार बना पाए। कुछ लोग (अपनी दायीं तरफ खड़े बिक्रमजीत मजीठीया की तरफ इशारा करते हुए) बिना कोई जेल काटे या कुर्बानी दिए अकाली दल पर कब्जे करने की फिराक में हैं।" बादल साहिब की इस बेहद कसैली टिप्पणी का न तो मौका था और न ही कोई दस्तूर। पत्रकार व कई लोग तो हैरानी से बादल साहिब का चेहरा देख रहे थे जबकि मजीठीया वहां खड़े खडे मानों जमीन में गढ़े जा रहे थे।

उस घटना के बाद और क्या कुछ हुआ, ये तो पता नहीं पर सुखबीर व मजीठीया की जोड़ी की लीडरशिप में पुराने व टक्साली अकाली नेता जैसे खुरच खुरच कर किनारे किए गए, ये तो सारे पंजाब ने देखा। शायद अकाली दल के पुराने बरगद की जड़ें व तने रहे होंगे वो टक्साली नेता जिनसे युवा पीढ़ी को ये चिढ़ हो सकती है कि उन्हें देख कर बादल साहिब नए लोगों पर तंज कंसते थे पर दिसंबर 2024 में जिस प्रकार अकाल तख्त साहिब फसील से हुए सवालों पर सुखबीर बादल को सबसे ज्यादा नमोशी का सामना करना पडा व पांच बार के पंथक मुख्यमंत्री रहे दिवंगत प्रकाश सिंह बादल साहिब से मृत्यु उपरांत पंथ रत्न के दिए गए सम्मान को छीन लिया गया, उस दिन मेरे कानों में गुरदास बादल साहिब की वो बात ताजा हो उठी जिसमें अकाली दल से बादलों का कब्जा छिन जाने की भविष्यवाणी की गई थी।

वर्ष 2022 के चुनाव में बुरी तरह धूल चाटने के बाद मजीठीया की अकाली दल में बेहद नाममात्र सरगर्मी तो पहले ही चर्चा का विषय बनी हुई थी और ताजा घटनाक्रम में जिस प्रकार नाभा जेल में बंद अपने नजदीकी रिश्तेदार मजीठीया को सुखबीर नाभा का दौरा होने के बावजूद मिलने नहीं गए उससे लगता है कि दूरियां अब खाई बनने लगी हैं। आगे क्या होगा, यो तो समय के गर्भ में है।

सड़क की व्यथा , आपको बताई क्या ! कहा आप कथा लिखेंगे ?

बरसात का मौसम हो और सुहानी सड़क हो तो फिर सफ़र का मज़ा ही कुछ अलग होता है इस विषय को , बात को भूल जाओ मेरे भाई क्योंकि, बरसात के मौसम में सड़क पर चलने के लिए सड़क आईने की तरह दिखाई दे यह किसी ₹ सपने ₹ के समान है । सड़क की व्यथा और जाम में फंसे लोगों की कथा को मैं किसी ज्ञानी , ध्यानी , ऋषि , मुनि , साधु , संत बनकर ₹ सिंदूर की कथा ₹ की तरह सुना नहीं सकता हूं । मैं तो सिर्फ आजादी की ₹ अभिव्यक्ति ₹ के तहत आपको कह रहा हूं बस , चिल्ला नहीं रहा हूं। सिर्फ बता रहा हूं । सड़क पर बरसात के मौसम में हमारे साथ क्या-क्या होता है ? क्या-क्या नहीं होता है ? क्या बताऊं ? क्या न बताऊं ? मैं यह तय नहीं कर सकता हूं । आप खुद समझदार एवं इंटेलिजेंट है इसमें कोई संदेह नहीं है । एक , दो , तीन , चार नहीं भाई साहब पूरे कई कई घंटे मेरी छाती पर , कई शहरों में , कई जगह बिना किसी आंदोलन या हड़ताल के मौन धारण करके कई वजनी वाहन ,गाड़ियां खड़ी रही और बड़ी बेबसी के साथ एम्बुलेंस में फंसे वो गंभीर मरीजों एवं स्कूली बच्चे , बूढ़े और काम पर आने जाने वाले जवान जाम में फंसे रहते हैं मैं मुख दर्शक बनकर खड़ी रहती हूं क्योंकि मैं एक सड़क हूं । मेरी व्यथा हर साल आप देखते भी हैं सुनते भी हैं और कुछ ..... ? खुद को जिम्मेदार नेता की तरह चमकदार और असरदार बताने के लिए आप जैसे कई समाजसेवी लोग मेरी रील पर रील बना बनाकर मीडिया को सौंप रहे हैं और मीडिया वाले अपना काम परंपरागत रूप से प्रतिवर्षानुसार कर ही रहे हैं । इस बारे में कुछ कहना ठीक नहीं है ।

ऐसे मुल्यवान समय में वहां पर मेरी भी (सड़क की) कोई सुनने वाला नहीं था ? वहां मुझे कोई देखने वाला नहीं था ? जाम में फंसे लोगों की मुसीबतों में सहायता करने वाला कोई नहीं था? वहां मेरी मरम्मत करवाना तो बहुत दूर की बात हो गई ? कुछ भ्रष्टाचारी , स्वार्थी लोग बरसात का बहाना लेकर मेरी मौत का इंतजार कर रहे हैं ताकि , मैं मर जाऊं और वो जश्न मनाए । दुख भारी मेरी व्यथा के कारण जाम की वजह से कई लोग मौत के आगोश में चले गए मैं जब आप के माध्यम से इस प्रकार से कोई ध्वनि सुनतीं हूं तो मेरी रूह कांप उठती है । मेरी आवाज चली जाती है । कान में सीटियां बजने लगती है । आंखों के सामने तारे नजर आने लगते हैं। मेरी इतनी दुख भरी बात सुनकर भी जनता जनार्दन के भाग्य विधाता कोई बात सुनने को तैयार नहीं है । वह पद के मदहोशी भरें आलम में ऐसे डूबे हैं जैसे कोई नशे में डूब गया हो । सड़क बनवाने वाले मेरे जन्मदाता सड़क बनाने से पहले ही कुछ ₹ लाल 'चंद' लालची ₹ सड़क खाने (मौत) की बात करते हैं वैसे इतिहास इस बात का गवाह है कि , ₹ देखो मेरे 'दरबार' का खेल , खा गए शक्कर पी गए तेल ₹ । कई तो डामर चाट गए और गिट्टी को चने की तरह चबा गए कोई चार खा कर आराम फरमा रहे हैं । इन खाने वालों के नाम आज भी राजनीति में बड़े शिद्दत के साथ याद करते हैं । ऐसे कई अनगिनत मामले हैं जिनके नाम आज भी स्वर्ण अक्षरों में राजनीति की दहलीज पर उन कार्यों के कारण दर्ज किया गया है । सड़क , सड़क नहीं बल्कि वह गड्ढों में तब्दील हो गई । यह भी रिल बनाने वाले कई समाजसेवीयों से अभी अभी पता चला है।

हर गड्ढा किसी कमीशन खोर की वजह से किसी की मौत का कारण बन जाता है तो किसी के लिए परेशानी का सबब बन जाता है । सड़क की बदइंतजामी के चलते आप , हम , सभी जाम में फंसे हुए हैं । इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है । इसीलिए , कहना पड़ता है कि , ₹ आया सावन झूम के ₹ वाले माहौल में यह कहना पड़ रहा है । ₹ आज बरसात के साथ मौसम बड़ा बेईमान है । ₹ और इधर सोशल मीडिया , प्रिंट मीडिया , इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जाम की वजह से , किसी की मौत की वजह से सड़क पर हुए ये बड़े-बड़े गड्ढे दिन रात छाए हुए हैं । इतना सब कुछ होने के बाद भी सड़क खाने वाले को , जाम में फंसे लोगों के लिए , जाम में फंसने से मरने वाले लोगों से कोई लेन देन नहीं है वो कमिशन की वजह से रोज जाम छलका रहे हैं । वह हर जाम पर मचलते हुए , झूलते हुए दिखाई दे रहे हैं । हरि अनन्त हरि कथा अनंता की तरह सड़क की कथा अनंता है ।

मैंने सड़क की व्यथा लिखकर आपको बता दी आप इस व्यथा को कथा में कब लिखेंगे ? हम इंतजार करेंगे खुदा करे कि , सड़क बन जाएं और हम दौड़े चले आएं ।

प्रकाश हेमावत

सौ वर्ष बाद भी संघ आत्ममुग्ध नहीं

सचिन त्रिपाठी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने शताब्दी वर्ष की दहलीज पर खड़ा है। यह केवल किसी संस्था के 100 वर्षपूरे होने की औपचारिकता नहीं है बल्कि भारत के आधुनिक इतिहास, समाज और विचारधारा की उस यात्रा की समीक्षा का अवसर है जिसमें संघ की भूमिका निर्णायक, विवादास्पद, किंतु निर्विवाद रूप से प्रभावशाली रही है। सौ वर्षों की यात्रा में संघ चाहे जितना बड़ा, शक्तिशाली और विस्तृत हुआ हो, वह आत्ममुग्ध नहीं हुआ है। यह वाक्य एक प्रशंसा नहीं, बल्कि एक वैचारिक अवलोकन है।

संघ की मूल प्रवृत्ति आत्मप्रशंसा या आत्ममुग्धता नहीं, आत्मसाधना है। आज की दुनिया में जहां संस्थाएं कुछ दशकों के भीतर ही 'इमेज ब्रांडिंग', 'स्मार्ट मैसेजिंग' और 'गौरवोत्सव' के चक्कर में अपना आत्मावलोकन खो बैठती हैं, वहीं संघ अपने आलोचकों की भी उतनी ही सावधानी से सुनता है जितनी श्रद्धा से स्वयंसेवकों की बात करता है। यह गुण उसे 'संगठन' से 'संघ' बनाता है।

1930 के दशक में जब यह 'आंदोलन' ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के समय में पनपा, तब इसके सामने राष्ट्रवाद को व्यावहारिक सामाजिक जीवन में उतारने की चुनौती थी। आज, जब वह राष्ट्र के नीति-निर्धारकों, शैक्षणिक परिसरों, मीडिया विमर्शों और वैश्विक मंचों पर प्रभावी भूमिका में है, तब भी वह सतत आत्मसमीक्षा करता रहा है। संघ ने कभी अपने सौ साल के संघर्ष को 'विजय यात्रा' की तरह प्रस्तुत नहीं किया। उसका कार्यकर्ता आज भी स्वयं को 'स्वयंसेवक' ही मानता है, नायक नहीं।

यह आत्ममुग्ध न होने का भाव उसकी कार्यपद्धति में स्पष्ट झलकता है। संघ कार्यालय आज भी उतने ही साधारण हैं जैसे 1925 में नागपुर में थे। किसी भव्यता, बैनर या नारेबाजी की ज़रूरत उसे नहीं लगती। संघ शिक्षा वर्गों, शाखाओं और प्रकल्पों के ज़रिये समाज निर्माण में रमा रहता है। वह जानता है कि दिखावे से नहीं, चरित्र से परिवर्तन आता है। संघ के आलोचकों ने अक्सर उसे 'पुरुषप्रधान', 'हिंदू केंद्रित', 'गुप्तवादी' या 'राजनीतिक आकांक्षाओं से प्रेरित' संस्था कहा है किंतु आत्ममुग्धता कभी उसकी आलोचना नहीं रही। आत्ममुग्धता वह होती है जब कोई संस्था अपनी ही छाया से अभिभूत हो जाए। संघ इसके ठीक उलट, अपनी सीमाओं का निरंतर आंकलन करता रहा है। चाहे वह सामाजिक समरसता के क्षेत्र में दलितों के लिए कार्य हो, महिलाओं की भूमिका पर विचार हो या मुस्लिम समाज से संवाद की नई पहल, संघ हमेशा इन विषयों पर आत्मसंवाद करता रहा है। सौ वर्षों की इस यात्रा में संघ को बहुत कुछ प्राप्त हुआ है। लाखों स्वयंसेवक, हजारों संगठन, राजनीतिक शीर्ष, शैक्षणिक नेटवर्क और सांस्कृतिक प्रभाव। फिर भी, संघ अपने आपको 'समाप्त यात्रा' नहीं मानता। उसकी दृष्टि में यह सब 'कार्यविस्तार का माध्यम है, लक्ष्य नहीं।' यह विचार ही उसे आत्ममुग्ध होने से रोकता है।

संघ का सबसे बड़ा सामाजिक योगदान यह रहा है कि उसने राष्ट्रीय चेतना को केवल भाषणों में नहीं, जीवन में उतारा। उसने स्वयंसेवक को मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर या किसी भी पूजा पद्धति से ऊपर एक भारतीय के रूप में गढ़ा। संघ की आत्मा उसके शाखा जीवन में बसती है जहां न कोई टीवी कैमरा होता है, न कोई उत्सव। वहां केवल साधना होती है तन, मन और राष्ट्र की।

आज जब वह शताब्दी की दहलीज़ पर खड़ा है, तो आत्ममुग्ध होने का अवसर उसके पास भरपूर है लेकिन वह नहीं है। न तो संघ ने अपनी 100 साल की यात्रा को कोई भव्य उत्सव बनाया, न ही मीडिया कैम्पेन। वह जानता है कि 'कार्य की पूजा' ही उसका मूल है, न कि प्रचार की आरती। यह उस गहराई का संकेत है, जो भारत के पारंपरिक ज्ञान और तपस्या की विरासत से जुड़ी है।

संघ का यह आत्मसंयम ही उसे दीर्घकालिक बनाता है। वह जानता है कि भारत के पुनर्जागरण की यात्रा केवल राजनीतिक सत्ता या सामाजिक संगठन से नहीं चलेगी, यह एक आत्मिक संघर्ष भी है और यह आत्मिकता, आत्ममुग्धता की दुश्मन होती है। शायद इसीलिए, जब संघ अपने 100वें वर्ष में प्रवेश करता है तो वह कोई घोषणा नहीं करता, बल्कि एक मौन साधक की तरह समाज के साथ चल पड़ता है "बिना थके, बिना रुके, बिना डिगे।"

संघ आत्ममुग्ध नहीं है क्योंकि वह जानता है कि सच्चा राष्ट्रनिर्माण आरंभिक होता है, समाप्त नहीं। वह जानता है कि समाज को हर दिन एक नई शाखा, एक नई चेतना और एक नया संकल्प चाहिए।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए घातक होगा 'माँसाहारी दूध' का आयात

हरीश शिवनानी

इस वर्ष की शुरूआत में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपनी दूसरी पारी की शपथ ली तो किसी को अहसास नहीं था कि वे इस बार अड़यिल तरीके से ऐसे बेतुके निर्णय लेंगे जो कई देशों के लिए मुसीबत बन जाएंगे। टैरिफ का मामला, अवैध प्रवासियों को अपने देश भेजना हो या ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत-पाक के बीच सीज़फायर करवाने का श्रेय लेने के लिए 24 बार दावे करना ऐसे ही थे। इस बार उनका नया शगूफा है भारत के साथ व्यापारिक समझौते के तहत उस दूध और वे डेयरी प्रोडक्ट भारत को बेचना जिनमें जानवरों के माँस, वसा, हड्डियों का चूरा और खून का इस्तेमाल होता है। भारत ने अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक परंपराओं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए प्रतिकूल होने के कारण इसे अत्यंत आपत्तिजनक बताते हुए इसके आयात के लिए स्पष्ट इनकार कर दिया है। इससे बौखलाया अमेरिका 'माँसाहारी दूध' निर्यात करने का दबाव डालने के लिए विश्व व्यापार संगठन तक पहुंच गया है पर भारत भी आयात न करने के अपने दृढ़ रुख पर कायम है।

अमेरिका, ब्राजील, चीन, यूरोप और कुछ अन्य देशों में गायों का वजन और दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए माँस आधारित चारा दिया जाता है। इसके तहत 'ब्लडी मील' यानी सूअर, मुर्गी, मछली, घोड़े और यहां तक कि बिल्ली-कुत्ते जैसे जानवरों के अंगों और उनके खून का उपयोग होता है। इसके तहत जानवरों के मरने के बाद उनके खून को सुखाया जाता है फिर उनके माँस, हड्डियों का चूर्ण, मछली पाउडर और जानवरों की चर्बी मिलाकर खास तरह का चारा बनाया जाता है। जिसे 'रेंडर्ड फीड' कहा जाता है। भारतीय मानकों के अनुसार ऐसे दूध को 'माँसाहारी' माना जाता है। भारत ने इसे सख़्ती से 'नॉन-नेगोशिएबल रेड लाइन' घोषित कर स्पष्ट कह दिया है कि वह ऐसे किसी भी डेयरी उत्पाद का आयात नहीं करेगा जो 'रेंडर्ड फीड' यानी माँसाहारी चारे से पोषित गायों से प्राप्त हुआ हो। भारत की मांग है कि आयातित दूध के साथ स्पष्ट प्रमाणीकरण हो, जो यह सुनिश्चित करे कि गायों को केवल शाकाहारी चारा दिया गया है।

भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड को लेकर रिश्ते पहले ही असहज हैं, अब 'एनिमल बेस्ड मिल्क प्रोडक्ट्स' के आयात के लिए भारत के अमेरिका को पूरी तरह से इनकार के बाद मामला और गंभीर हो गया है। भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता का उद्देश्य 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 500 अरब डॉलर तक बढ़ाना है। इस राह में डेयरी प्रॉडक्ट पर ट्रेड डील रुकना बड़ी बाधा बनकर उभरा है। यह मुद्दा इतना गहरा गया है कि अमेरिका ने भारत की इन शर्तों को 'अनावश्यक व्यापार बाधा' बताते हुए इस मुद्दे को विश्व व्यापार संगठन तक में उठा लिया

है। अमेरिका ने 1 अगस्त 2025 तक इस व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने की समय-सीमा तय की है, लेकिन डेयरी उत्पादों को लेकर भारत का सख्त रुख यथावत है।

भारत की मुख्य आपत्तियाँ विशेषतः दो बिंदुओं पर हैं। पहली है- धार्मिक और सांस्कृतिक संवेदनशीलता: भारत में गाय को पवित्र माना जाता है और दूध का उपयोग न केवल भोजन में, बल्कि पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों में भी होता है। माँसाहारी चारा खाने वाली गायों का दूध और उससे बने उत्पादों का उपयोग भारतीय संस्कृति और शाकाहारी मान्यताओं के विरुद्ध माना जाता है। दूसरी बड़ी और महत्त्वपूर्ण आपत्ति है कि भारत यदि 'माँसाहारी दूध' आयात करता है, तो इसका भारतीय डेयरी उद्योग, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, और किसानों पर गहरा, घातक और बहुआयामी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। यह उद्योग आठ करोड़ से अधिक छोटे और सीमांत किसानों और पशुपालकों को रोजगार देता है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। सस्ते आयात से दूध की कीमतों में कमी और मांग में गिरावट के कारण इन ग्रामीणों की आय में भारी कमी हो सकती है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश है। डेयरी उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में करीब 5 प्रतिशत योगदान देता है, जिसका मूल्य 2024 में 18,975 अरब रुपए था और 2025-2033 के दौरान 12.35 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ 2033 तक 57,001.81 रुपए अरब तक पहुंचने की उम्मीद है। भारतीय स्टेट बैंक ने इस बिंदु को ध्यान में रखते हुए इसी 14 जुलाई को एक रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट के अनुसार, यदि भारत अमेरिकी डेयरी उत्पादों के आयात के लिए अपने बाजार को खोलता है, तो भारतीय डेयरी उद्योग को प्रति वर्ष 1.03 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हो सकता है क्योंकि भारत का डेयरी बाजार 64 प्रतिशत असंगठित है। सस्ते आयातित दूध और डेयरी उत्पाद स्थानीय उत्पादकों को प्रतिस्पर्धा में कमजोर कर सकते हैं, विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में, जहां छोटे किसान और पशुपालक, दूध विक्रेता हैं।

ज़ाहिर है, 'माँसाहारी दूध' का आयात भारतीय डेयरी उद्योग और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए कई स्तरों पर घातक है। ऐसे में भारत के लिए यह ज़रूरी होगा कि वो अमेरिका से दृढ़तापूर्वक दो टूक कह दें कि 'ब्लडी मील' से बना 'रेंडर्ड फीड' चारे से पोषित 'माँसाहारी दूध' सनातन धर्मी भारतीय जनमानस और देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ किसान और पशुपालक के आर्थिक हितों के गंभीर और नुकसानदायक है। उसे भारत के साथ 'ट्रेड डील' करनी है तो इस विवादास्पद बिंदु को अलग करना होगा।

डेटा की दलाली और ऋण की रेलमपेल : निजी बैंकों का नया लोकतंत्र

- प्रियंका सौरभ

"नमस्ते महोदय/महोदया, क्या आप व्यक्तिगत ऋण लेना चाहेंगे?"

कभी दोपहर की झपकी के बीच, कभी सभा के समय, कभी मंदिर के बाहर, तो कभी वाहन चलाते समय — यह स्वर अब हमारे जीवन की अनिवार्य पृष्ठभूमि बन चुका है।

यह मात्र एक स्वर नहीं, बल्कि एक कृत्रिम उत्पीड़न है — जो यह उद्घोष करता है कि हमारे नाम, दूरभाष अंक और आवश्यकताएं अब बाज़ार की संपत्ति बन चुकी हैं।

जब सरकारें 'डिजिटल भारत' के नारे लगाती हैं, उसी समय निजी बैंक हमारे जीवन की शांति को किस्तों में बेचने आ जाते हैं।

हमारा दूरभाष अंक इन्हें कौन देता है?

यह प्रश्न आज हर जागरूक नागरिक के मन में उठता है — आख़िर निजी बैंक या ऋण देने वाली एजेंसियों को हमारा मोबाइल नंबर, नाम और अन्य निजी जानकारी कहाँ से प्राप्त होती है?

उत्तर सीधा है — यह जानकारी हम स्वयं ही, अनजाने में, बाज़ार को सौंप देते हैं। जब हम किसी मोबाइल अनुप्रयोग को डाउनलोड करते समय बिना पढ़े ₹मैं सहमत हूँ₹ पर चिह्न लगाते हैं, किसी ऑनलाइन खरीदारी की वेबसाइट पर अपना मोबाइल नंबर दर्ज करते हैं, या किसी नौकरी पोर्टल पर अपना विवरण भरते हैं — तब हम अपनी निजता को बाज़ार के हवाले कर देते हैं।

ऐसे अनेक मोबाइल अनुप्रयोग होते हैं जो हमारे संपर्क-सूची, संदेशों, स्थान और यहां तक कि हमारे फोटो तक की पहुँच माँगते हैं। और हम, सुविधा के नाम पर, इन्हें सहमति दे देते हैं। बाद में यही जानकारी अलग-अलग बिचौलियों द्वारा निजी बैंकों और विक्रय अभिकर्ताओं को बेच दी जाती है।

यह एक प्रकार की ₹डेटा दलाली₹ है — जिसमें व्यक्ति की निजता को मूल्यवान वस्तु मानकर नीलाम किया जाता है।

सरकारी बैंक क्यों नहीं करते ऐसी धृष्टता?

जहाँ निजी बैंक दिन-रात मोबाइल पर ऋण प्रस्ताव भेजते हैं, वहीं सरकारी बैंक अपेक्षाकृत शांत और पारंपरिक तरीके से कार्य करते हैं।

सरकारी बैंकों में आज भी ऋण प्राप्त करने के लिए भारी कागज़ी कार्यवाही, दस्तावेज़ों की सत्यता, ज़मानतदार और कई प्रकार की प्रमाणिकताएं माँगी जाती हैं। ये बैंक सेवा को प्राथमिकता देते हैं, न कि बिक्री को।

उनके पास निजी बैंकों की तरह भारी विपणन (मार्केटिंग) बजट नहीं होता, और न ही एजेंटों को कमिशन देने की उतनी होड़ होती है। इसलिए वे बिना माँगे किसी को कॉल नहीं करते।

यही कारण है कि आपको कभी किसी सरकारी बैंक से ₹तत्काल ऋण की सुविधा₹ का फोन नहीं आता, जबकि निजी बैंक आपको ग्राहक से अधिक 'लाभदायक अवसर' के रूप में देखते हैं।

गरीब को ऋण नहीं, कॉल नहीं — क्यों?

जो लोग वास्तव में आर्थिक रूप से पिछड़े हैं, जिन्हें ऋण की आवश्यकता सबसे अधिक है — उन्हें न तो कॉल आता है, न कोई बैंक प्रतिनिधि उनके द्वार पहुँचता है।

ऐसे लोगों के पास ₹क्रेडिट स्कोर₹ नहीं होता, उनकी आय अनियमित होती है, और उनके पास न संपत्ति होती है, न बैंकिंग इतिहास। इसलिए बैंक उन्हें जोखिम मानते हैं, संभावना नहीं।

वहीं, जिन लोगों ने पहले से किसी ऋण का भुगतान समय पर किया है, जो व्यक्ति ऑनलाइन खरीदारी करते हैं या जिनकी आय अधिक है — वही निजी बैंकों के लिए ₹लक्ष्य₹ होते हैं।

-प्रियंका सौरभ, लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार, हरियाणा

इस प्रकार ऋण सुविधा उन तक नहीं पहुँचती, जिन्हें उसकी वास्तव में आवश्यकता है — बल्कि उन तक पहुँचती है जो पहले से संपन्न हैं।

क्या यह कॉल मानसिक उत्पीड़न नहीं है?

यह प्रश्न अब केवल विचार का विषय नहीं रहा — यह वास्तविक अनुभव बन चुका है। अधिकांश लोग दिन में चार-पाँच बार अनचाही कॉल्स से परेशान रहते हैं।

नमस्ते, आपको 5 लाख रुपये तक का ऋण स्वीकृत है...

बस एक दस्तावेज़ दीजिए और आज ही राशि प्राप्त कीजिए...

आपका ऋण पहले से स्वीकृत है, बस अंतिम चरण बाकी है...

इन कॉल्स को ठुकराने पर भी चैन नहीं मिलता। एक नंबर बंद किया तो दूसरा फोन आने लगता है। 'कृपया मुझे परेशान न करें' सेवा (DND) सक्रिय करने के बावजूद ये कॉल्स आती रहती हैं।

यह एक प्रकार की ₹वित्तीय मानसिक हिंसा₹ है — जिसमें व्यक्ति को यह अहसास दिलाया जाता है कि यदि उसने ऋण नहीं लिया, तो वह कोई अवसर खो रहा है, या आर्थिक दृष्टि से पिछड़ रहा है।

डेटा बेचने वाले कौन हैं?

निजता की यह चोरी केवल बैंकों द्वारा नहीं होती। इसके पीछे एक बड़ा और संगठित तंत्र है — जिसमें मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियाँ, विभिन्न मोबाइल अनुप्रयोग, नौकरी खोजने वाले पोर्टल, बीमा विक्रेता, ई-कॉमर्स कंपनियाँ और यहां तक कि कुछ सरकारी वेबसाइटें भी शामिल हो सकती हैं।

यह संस्थाएँ विभिन्न माध्यमों से हमारे निजी विवरण एकत्र करती हैं — और फिर इन्हें कई बार खुले बाज़ार में विक्रय कर देती हैं।

कई बार बैंक प्रतिनिधि आपको कॉल करके आपके पिताजी का नाम, आपकी जन्मतिथि, नौकरी, यहाँ तक कि आपकी मासिक आय तक बता देते हैं। इससे स्पष्ट है कि हमारा निजी जीवन अब सार्वजनिक मंच पर बिकने वाली वस्तु बन चुका है।

सरकार क्या कर रही है?

सरकार ने वर्ष 2023 में 'डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण विधेयक' पारित किया था। इसके अनुसार, किसी भी संस्था को आपकी अनुमति के बिना आपका व्यक्तिगत डेटा उपयोग करने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

किन्तु व्यवहार में यह विधेयक आज भी कागज़ों तक ही सीमित है। ना तो कॉल्स रुके हैं, न ही डेटा की दलाली थमी है।

जब तक इन नियमों का पालन कराने के लिए कठोर दंड और स्पष्ट नियंत्रण नहीं होंगे, तब तक नागरिकों की निजता मात्र एक हास्यास्पद अवधारणा बनी रहेगी।

कांवड़ यात्रा की सार्थकता और संदेश !

वर्तमान में सावन का महीना चल रहा है और सावन के महीने में 'पैदल कांवड़ यात्रा' का बहुत महत्व है।सावन के महीने में कांवड़िए पूरे मार्ग में उपवास, नियम, और भक्ति के साथ यात्रा करते हैं तथा पैदल चलते हुए कठिन से अति कठिन रास्तों को पार करते हैं। इस प्रक्रिया को शिव भक्ति का प्रतीक माना जाता है, जिसमें भक्ति, तपस्या और समर्पण का भाव प्रमुख होता है। पाठक जानते हैं कि भगवान शिव का सबसे प्रिय महीना सावन है, जिसकी शुरुआत 11 जुलाई 2025 से हो चुकी है और ये महीना 9 अगस्त 2025 को समाप्त होगा। सावन शुरु होते ही सड़कों पर 'बम बम भोले' और 'हर हर महादेव' की गूंज उठती है, जब भगवान शिव के भक्त एक साथ कांवड़ लेकर निकल पड़ते हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि कांवड़ भी कई प्रकार के होते हैं जैसे झूला कांवड़, खड़ी कांवड़, डाक कांवड़, जिसमें से सबसे प्रचलित झूला कांवड़ है। वास्तव में, कांवड़ यात्रा आस्था और धर्म का एक पावन(पवित्र) पर्व है। श्रद्धालु, भक्तगण प्राचीन काल से ही यह हिन्दू तीर्थ यात्रा करते रहें हैं, जिसमें श्रद्धालु/भक्तगण गंगाजल लेकर भगवान शिव का जल अभिषेक करने के लिए यह यात्रा करते हैं। हमारे देश में हर साल सावन में जगह-जगह पर हमें कांवड़ियों की भीड़ देखने को मिलती है। पाठकों को बताता चलूं कि कांवड़ यात्रा के संदर्भ में हमारे यहां की कहानियां, किस्से और मान्यताएं प्रचलित हैं। कहते हैं कि भगवान शिव के भक्त परशुराम जी ने गढ़मुक्तेश्वर से गंगाजल लाकर बागपत स्थित पुरा महादेव मंदिर में शिव का अभिषेक (जलाभिषेक) किया था। कई लोग इसे ही 'पहली कांवड़ यात्रा' कहते हैं। एक अन्य मान्यता के अनुसार कुछ लोग भगवान राम को पहले कांवड़िए के रूप में देखते हैं। इस मान्यता के अनुसार भगवान राम ने देवघर में शिवलिंग पर जलाभिषेक किया था। जानकारी के अनुसार भगवान राम ने बिहार के सुल्तानगंज से गंगाजल भरकर देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ धाम में शिवलिंग का जलाभिषेक किया था।कुछ मान्यताओं में कांवड़ की कहानी श्रवण कुमार से जुड़ी बताते हैं, जिन्होंने त्रेता युग में अपने अंधे माता-पिता को कांवड़ पर बिठाकर हरिद्वार तक का सफर पूरा किया था। इसे भी 'कांवड़ की प्रथम यात्रा' के रूप में देखा जाता है। कहते हैं श्रवण कुमार ने अपने अंधे माता-पिता को हरिद्वार में गंगा स्नान कराया था तथा साथ ही वह अपने साथ गंगाजल भी लेकर आए थे।एक अन्य मान्यता के अनुसार कांवड़ को रावण और समुंद्र मंथन की कहानी से भी जोड़ा जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार , समुद्र मंथन से निकलने के बाद भगवान शिव ने विष को पीया था जिससे उनका कंठ नीला हो गया था। तब रावण ने कांवड़ में जल भरकर 'पुरा महादेव' पहुंचें थे और भगवान शिव का जलाभिषेक किया था।

उसी समय से कांवड़ यात्रा की परंपरा शुरू हुई। यह भी मान्यता है कि जब भगवान शिव ने समुद्र मंथन से निकलकर विष पिया था, तो देवताओं ने शिव जी के ताप को शांत करने के लिए पवित्र नदियों का जल उन पर चढ़ाया था और उसी समय से कांवड़ यात्रा शुरू हुई थी। पाठकों को बताता चलूं कि कांवड़ को कंधे पर रखा जाता है। वास्तव में कांवड़ को कंधे पर रखना एक परंपरा मात्र नहीं है,यह श्रद्धा, सेवा और समर्पण का प्रतीक माना जाता है।श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता को कांवड़ में बिठाकर अपने कंधे पर उठाया था, जो सेवा भाव का प्रतीक है और इसी प्रकार से भगवान श्री राम ने गंगाजल से अपने पिता दशरथ की मोक्ष के लिए कांवड़ उठाई थी। माना जाता है कि कांवड़ को कंधे पर उठाकर चलना अपने अहंकार को त्यागने का प्रतीक है।धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, कंधे पर कांवड़ रखकर गंगाजल लाने से सारे पाप खत्म हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।यह भी माना जाता है कि जो श्रद्धालु पूरे विधि-विधान और सच्ची निष्ठा और श्रद्धा से कांवड़ यात्रा करते हैं, तो उनकी हर मनोकामनाएं पूरी होती हैं। हमारे देश में हर साल सावन माह में करोड़ों की तादाद में कांवड़िये सुदूर स्थानों से आकर आकर गंगा नदी से विभिन्न पात्रों में जल भरते हैं और उससे अपने मन्नत वाले शिवालय में शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं। हरिद्वार, गंगोत्री, गौमुख, ऋषिकेश जैसे पवित्र स्थानों से श्रद्धालु भक्त गंगाजल भरकर अपने-अपने क्षेत्रों के शिव मंदिरों में ले जाते हैं और शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं। कई लोग तो अपने नजदीक की पवित्र नदियों से भी जल लेकर अपने गांव-देहात के शिव मंदिरों तक की भी यात्रा करते हैं। पाठकों को बताता चलूं कि कांवड़ यात्रा मुख्य रूप से उत्तर भारत में ही प्रसिद्ध है और सोमवार के दिन का इसमें विशेष महत्व है। कांवड़ यात्रा में श्रद्धालुओं के बीच किसी किस्म का ऊंच-नीच का भेद नहीं होता। कांवड़ यात्रा केवल जल लाने की यात्रा नहीं है, बल्कि यह भक्ति, श्रद्धा और तपस्या की अनूठी व नायाब प्रतीक है। शिवभक्तों के लिए यह यात्रा अपने मन को शुद्ध करने और ईश्वर के प्रति अपनी निष्ठा जताने का माध्यम है। कांवड़ यात्रा का आयोजन बहुत ही अच्छी बात है, लेकिन भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए इस आयोजन में भागीदारी करने वालों को(कांवड़ यात्रा करने वालों को) इसकी महत्ता भी समझनी होगी। प्रतीकात्मक तौर पर कांवड यात्रा का संदेश इतना भर है कि आप जीवनदायिनी नदियों के लोटे भर जल से जिस भगवान शिव का अभिषेक कर रहे हैं , वे शिव वास्तव में सृष्टि का ही दूसरा रूप हैं। धार्मिक आस्थाओं के साथ सामाजिक सरोकारों से रची कांवड़ यात्रा वास्तव में जल संचय की अहमियत को उजागर करती है। वास्तव में कांवड़ यात्रा की सार्थकता तभी है, जब हम जल का संचय करें, उसे पशु-पक्षियों को उपलब्ध कराएं। सिंचाई के काम में लें।तभी वास्तव में भगवान शिव प्रसन्न होंगे, कांवड़ यात्रा का सही मायनों में यही संदेश है, लेकिन इस दौरान प्रायः यह देखा जाता है कि कई कांवड़िये जहां तहां उत्पात मचाते हैं। मारपीट, तोड़-फोड़,हिंसा की घटनाएं सामने आती हैं, सड़कों पर अतिक्रमण किया जाता है, जिससे अन्य लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है,यह सब ठीक नहीं है। वास्तव में कांवड़ियों में खुद जिम्मेदारी का बोध होना चाहिए और उन्हें याद रखना चाहिए कि वे देश के नागरिक भी हैं। उन्हें कांवड़ यात्रा के दौरान स्थानीय प्रशासन के साथ सहयोग करना चाहिए। कांवड़ यात्रा के समय अनुशासन व जिम्मेदारी का पालन करना चाहिए। वास्तव में, धर्म और आस्था नितांत निजी विषय हैं। इनकी श्रेष्ठता तभी स्थापित हो सकती है, जब इनका पालन करते हुए हम किसी दूसरों का मन न दुखाएं। कांवड़ियों को शुद्धता, पवित्रता, अनुशासन का पालन करते हुए कांवड़ यात्रा करनी चाहिए। कांवड़ यात्रा के दौरान संयम, मर्यादा में रहना बहुत जरूरी है। भाईचारे की भावना, सहयोग, सद्भावना ही कांवड़ यात्रा का मूलमंत्र है। किसी का दिल दुखाकर, किसी को व्यथित करके, किसी को आहत करके हम कभी भी सुखी व संपन्न नहीं हो सकते हैं। हमें यह चाहिए कि हम कांवड़ यात्रा के माध्यम से लोगों में प्यार, अपनत्व की भावना, सद्भावना , लोगों के भीतर अपने धर्म के लिए प्रशंसा और आकर्षण का भाव पैदा करें, तभी वास्तव में कांवड़ यात्रा की सार्थकता सिद्ध होगी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

कांवड़ यात्रा के मध्यम से मानव कल्याण का संकल्प क्यों नहीं लेते युवा वर्ग।

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

कांवड़ यात्रा जो श्रावण मास में होती है। जिसमें भगवान शिव के प्रति भक्तों की अटूट श्रद्धा और भक्ति के साथ साथ विश्वास का प्रतीक भी माना जाता है श्रवण मास को और इसी माह में कांवड़ यात्रा के मध्यम से भक्त और भगवान का अटूट स्नेह देखने को मिलता है जब पवित्र गंगा जल को भरकर कांवड़ में वहां कांवड़िए लातें है और फिर शिवलिंग गंगा जल चढ़ाते हैं।तो उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती है। यहां यात्रा हमारे अंतःकरण के दूषित विकारों को निकलने में बहुत मददगार सिद्ध होती है । लेकिन इसमें खास बात यह है कि इस में शामिल होने वाली युवा शक्ति नशें की बुराईयों से दूर रहें और सात्विक आहार ग्रहन करें। आज-कल देखा जा रहा है की युवा कांवड़ यात्री यात्रा मार्ग में बहुत ज्यादा पूरे रास्ते में उपद्रव करने से बाज नहीं आते हैं। कांवड़ यात्रा में नियमवाली पर ध्यान देना भी जरूरी है जिस में भक्त समाजिक बुराईयों से दूर रहें कर अपने धार्मिक रीति-रिवाजों को महत्व देंगे , तभी इस यात्रा का समाजिक उद्देश्य के साथ साथ धार्मिकता का प्रकाश भी आप सभी के जीवन में फैलेगा । इसके साथ ही स्वस्थ की दृष्टि से शारीरिक रूप से ऐसी यात्राओं से शरीर का मंथन भी शुद्ध होता है। और धार्मिक रूप से देखा जाए तो भगवान शिव को प्रसन्न करने का सबसे आसान तरीका शिवलिंग पर एक लोटा जल चढ़ाना है। कांवड़ यात्रा ही है जिसमें हिन्दुओं की आस्था का मेला देखने को मिलता है । पर अब हमारी युवा शक्ति को देखना है कि उन्हें क्या बनना है ? अगर वहां श्रवण कुमार बनेंगे तो सब का भला होगा। सेवा क्षेत्र में इस यात्रा मार्ग पर शिविर लगायें जाना चाहिए , जो युवा वर्ग को मानव सेवा की और ले जाये। अस्पतालों में दान पुण्य करें जिससे गरीब बेसहारा लोगों को मदद मिल सके । वृद्ध आश्रम में युवा वर्ग जाये और बुजुर्गो के साथ भोले का प्रसाद उन्हें बांटे , तो उन्हें भी बहुत अच्छा लगेगा। अनाथालय में दान देवें और युवा वर्ग ऐसी कांवड़ यात्राओं से परोपकार का आयाम स्थापित कर सकते हैं जिससे सामुदायिक भावना एकता प्रेम समन्वय आदि बढ़ेंगे । भारत में धर्म का महत्व अपने आप में बहुत ज्यादा है। हमारे संस्कारों में सभ्यता में धार्मिक गतिविधियों में इसका अपना महत्व है। ऐसे देखा जाएं तो पूरे सालभर तीज त्योहार पर्व की विभिन्नता में एकता का प्रतीक यह उमंगता और उल्लास हमारे देश में बना ही रहता है। जीवन के हर एक पल रंग बिरंगे ही होते हैं और खुशियों व ग़म में

हमारे धार्मिक रीति-रिवाजों व संस्कृति और संस्कार सभी शमिल हैं। उन्हीं में से हिन्दूओं की मान्यता के अनुसार वेदों पुराणों में सदियों से बताये हुए कथनों के अनुसार श्रवण मास सबसे पवित्र होता है। शिव शंकर महादेव, भोले भंडारी की समरसता में भूखे को भोजन और प्यासे को पानी जरूर मिलता है। वहीं पुरानी परम्परा जो सदियों से चली आ रही थी अब वर्तमान समय में उसका आधुनिकरण या फिर हम कहें सकते हैं की संस्कारों का झरण होते हुए दिखाई देने लगा है ? अब धार्मिक यात्रा प्रतिष्ठा का विषय बनती जा रही है और राजनीतिक दलों के लिए भी ऐसी यात्राओं से अपना भला होने की आंशका दिखाई देने लगी है। आज कल चकाचौंध व धर्म के नाम पर बांटने वालों का बोलबाला दिखाई देने लगा है। हिन्दूओं के धर्म को भ्रष्ट करने के पाप करने वाले लगातार नाकारात्मक कार्य करने में लगे रहते हैं। वहीं नवयुवक जल्दी बहकावे में आ जाते हैं, आजकल हुड़दंग मचाने में उन्हें अच्छा लगता है। कांवड़ यात्रा मार्ग पर तेज आवाज में डीजे बजाने में बहुत बड़ी शान की बात होती है । वहीं आजकल कांवड़ यात्रा में तोड़फोड़ बवाल हंगामा आम बात क्यों हों गई है ? इस तरह सड़कों पर तोड़फोड़ बवाल करने वाले क्या बताने की चाह रख रहे हैं। एक और सरकारी मशीनरी शासन प्रशासन उनके आने जाने खानें की व्यवस्था में लगी रहती है। जिसमें बहुत धन खर्च होता है। लेकिन वहां एक ही बात सोचतीं है की यात्रा मार्ग पर अच्छा वातावरण बना रहे। अगर इतना सब कुछ करने के बाद भी व्यवस्था में विघ्न व असंतोष का भाव आयेगा तो फिर यहां तो ग़लत बात है। इस तरह हुड़दंग कोई अच्छा संकेत नहीं है। कांवड़ यात्रा हमारे लिए हमारी आस्था सनातन संस्कृति व परम्परा की यात्रा जरूर है पर क्या इससे हम अच्छा व सकारात्मक संदेश क्यों नहीं दे पा रहे हैं ? कहां गलती हो रही है इस और ध्यान देने की आवश्यकता है। हम इस कांवड़ यात्रा के मध्यम से परोपकार के नये आंकड़े क्यों नहीं जोडते। करुणा दया के भाव से गरीबों की मंदद के लिए हमारे हाथ आगे क्यों नहीं बढ़ते। यह फिर किसी बीमार व लाचार व्यक्ति को रक्तदान देकर जीवन क्यों नहीं बचाते। अगर हम युवा वर्ग ऐसे पुनीत कार्य करेंगे तो सही में सब मंगल होगा। और श्रवण मास की पवित्रता खुशियों से भरी होगी। इस तरह की कांवड़ यात्रा में लाखों करोड़ों युवा शक्ति जब देश के अलग-अलग राज्यों में बड़े पैमाने में हर्षोल्लास के साथ शमिल होते हैं। जब कांवड़ यात्रा शुरू होती है तो हम अपने आराध्य शिवशंकर भोलेनाथ को नमन करते हैं और फिर भक्त पवित्र नदियों से जल लाकर शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं। उस समय वह भलाई व इंसानियत का फर्ज निभाने का संकल्प क्यों नहीं लेते हैं। जिस प्रकार भगवान शिव शम्भू ने हलाहल किया और समुद्र मंथन में निकले उस विष को पिया और पूरे जगत व तीन लोकों को एक बहुत गंभीर संकट से बहार निकला था, ऐसे कालों के काल महाकाल के भक्तों को ऐसी कांवड़ यात्रा के मध्यम से संकल्प लेना ही होगा। कि मानव कल्याण के प्रति हम सभी हमेशा आगे आयें । किसी की दुख-तकलीफ में जो अपनी जिम्मेदारी को अपने कंधों पर उठा कर जीवन की कांवड़ उठाता है, वहीं शिव का सच्चा भक्त कहलाता है। क्योंकि ज़िन्दगी तो पहेली ही है , जो कभी हंसती है कभी रूलाती है पर जीवन तो चलने का नाम है तो भोले नाथ के भक्तों को तो प्रभावमान बन अविरल धारा से चलते रहना ही होगा। अगर इस कांवड़ यात्रा को नशामुक्त व मानव कल्याण से जोड़ा जाएगा तो सब का भला होगा और भोले बाबा हमेशा अपने भक्तों पर प्रसन्न रहेंगे।

झारखंड: जहां अधिकारियों से काम कराने हेतु मंत्री को बैठना पड़ता है अनशन पर !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। भारत में भला ऐसे कितने राज्य है जहां किसी कद्दावर विभाग के मंत्री को ही अपने अधिकारियों से जनता का काम कराने हेतु अनशन पर बैठना पड़े ? तो जानिए इसका जीता जागता उदाहरण झारखंड है । जहां स्वयं ग्रामीण विकास विभाग के मंत्री दीपिका पांडे सिंह को आठ दिनों से महगामा में पानी नहीं मिलने पर अनशन मे बैठाना पड़ा है !! यह चौंकाने वाली घटना है महागामा नगर पंचायत क्षेत्र की है । यहां बीते आठ दिनों से जलापूर्ति ठप रहने पर राज्य की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह महगामा स्थित पीएचईडी कार्यालय में धरने पर बैठ गईं।

फिर क्या था ग्रामीण विकास मंत्री के धरने पर बैठने की सूचना मिलने पर अधिकारियों में अफरा तफरी का माहौल हो गया। जिले से लेकर प्रखंड तक के अधिकारी दौड़े भागे पहुंचे। बता दें कि महगामा में मोटर जलने से बीते आठ दिनों से जलापूर्ति ठप है

मंत्री ने कहा कि पीएचईडी बिजली विभाग और नगर पंचायत प्रशासन के अधिकारियों के घरों में अगर आठ दिनों से जलापूर्ति ठप रहती तो क्या वे सभी

इसी तरह खानापूर्ति करते रहते? आम जनता की तकलीफ अधिकारियों को दिखाई नहीं देती है।

इस मामले में किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। महागामा एसडीओ आलोक वरण केसरी, नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी आशीष कुमार, बिजली विभाग के एसडीओ कंचन टुडू, पीएचईडी के कनीय अभियंता प्रेम उरांव, कृष्णा पाठक, राहुल कुमार आदि मंत्री के समक्ष आकर समस्या का त्वरित समाधान के लिए पहल शुरू की गई।

बलंगा के मरीज को सर्वोत्तम उपचार के लिए दिल्ली एम्स ले जाया गया: उपमुख्यमंत्री प्रभाती परिडा

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: उपमुख्यमंत्री पार्वती परिदा ने बलंगा के एक मरीज को एयरलिफ्ट करके दिल्ली एम्स ले जाने पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा, बलंगा के एक मरीज को आज बेहतरीन इलाज के लिए एयरलिफ्ट करके दिल्ली एम्स ले जाया गया। मैं इस घटना पर त्वरित कार्रवाई के लिए मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी का आभार व्यक्त करती हूँ।मरीज़ जल्द स्वस्थ होकर घर लौट आए, यही मेरी ईश्वर से

प्रार्थना है।एम्स भुवनेश्वर में इलाज करा रहे बलंगा के मरीज़ को आज एयरलिफ्ट करके एम्स दिल्ली लाया गया। इस बीच, एम्स दिल्ली में मरीज़ के लिए बेड की व्यवस्था कर दी गई है। मरीज़ को एक विशेष एम्बुलेंस से दिल्ली एयरपोर्ट ले जाया गया। इसके लिए ग्रीन कॉरिडोर की व्यवस्था की गई।दिल्ली स्थित एम्स में एक विशेष टीम उनका इलाज करेगी।वहाँ से एक टीम आएगी और मरीज़ के साथ रहेगी। मरीज़ का शरीर 70 से 75 प्रतिशत जल चुका है। मेडिकल टीम और मरीज़ के परिवार से बातचीत चल रही है।

सरायकेला -चाईबासा में 14आईईडी, हेडं ग्रेनेड, ऐमोनियम नाइट्रेट बरामद

पo सिंहभूम तथा सरायकेला पुलिस , जगुआर , सीआरपीएफ की बड़ी उपलब्धी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला/ एकीकृत सिंहभूम जिले का बेहद पिछड़ा इलाके के जंगली क्षेत्र ,टोकलो थाना एवं सरायकेला-खरसावां जिले के कुचाई थाना अन्तर्गत जंगली सीमावर्ती पहाड़ी क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व में लगाए गए लगभग 14 आई.ई.डी., देसी हैंड ग्रेनेड, अमोनियम नाइट्रेट पाउडर, पटाखा पाउडर बरामद किए गए. सुरक्षा की दृष्टि से इन्हें बमनिरोधक दस्ते की मदद से उसी स्थान पर नष्ट कर दिया गया.

पुलिस अधीक्षक कार्यालय से जानकारी देते हुए बताया गया कि प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछू, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन, पिंटू लोहरा, चंदन लोहरा, अमित हांसदा उर्फ अपातन, जयकांत, रापा मुंडा एवं अन्य नक्सलियों के अपने दस्ते के सदस्यों के साथ सारंडा/कोलहान क्षेत्र में विध्वंसकारी गतिविधियों के भ्रमणशील होने की सूचना मिली थी. जिसके आलोक में झारखंड पुलिस, कोबरा, सीआरपीएफ और झारखंड जगुआर की टीमों का एक संयुक्त अभियान दल गठित किया गया है और लगातार अभियान चलाया जा रहा है.

पुलिस अधीक्षक, पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा को 18 जुलाई को गुप्त सूचना मिली कि प्रतिबंधित भाकपा (माओवादी) नक्सली संगठन के उग्रवादियों ने सुरक्षा

बलों के विरुद्ध उनके अभियान को रोकने और लक्षित क्षति पहुंचाने के उद्देश्य से पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा जिले के टोकलो थाना और सरायकेला-खरसावां जिले के कुचाई थाना के सीमावर्ती जंगल/पहाड़ी क्षेत्र में गोला-बारूद छिपाकर रखा है. जिसके आलोक में झारखंड पुलिस (चाईबासा और सरायकेला-खरसावां पुलिस), झारखंड जगुआर और सीआरपीएफ 60 बटालियन के साथ एक संयुक्त अभियान दल का गठन कर 19 जुलाई 2025 को पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा जिले के टोकलो थाना और सरायकेला-खरसावां जिले के कुचाई थाना के सीमावर्ती जंगल/पहाड़ी क्षेत्र में तलाशी अभियान शुरू किया गया.

संयुक्त अभियान दल द्वारा आगे के सर्च अभियान के दौरान आज पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा जिले के टोकलो थाना एवं सरायकेला-खरसावां जिले के कुचाई थाना के सीमावर्ती जंगल पहाड़ी क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व से लगाए गए लगभग 14 आईईडी (प्रत्येक का वजन लगभग 02-02 किलोग्राम), देसी हैंड ग्रेनेड, अमोनियम नाइट्रेट पाउडर, पटाखा पाउडर बरामद किया गया. जिसे सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ते की मदद से नष्ट कर दिया गया है. इस संबंध में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

झारखंड के बोकारो के जंगल से हथियारों का जखीरा बरामद

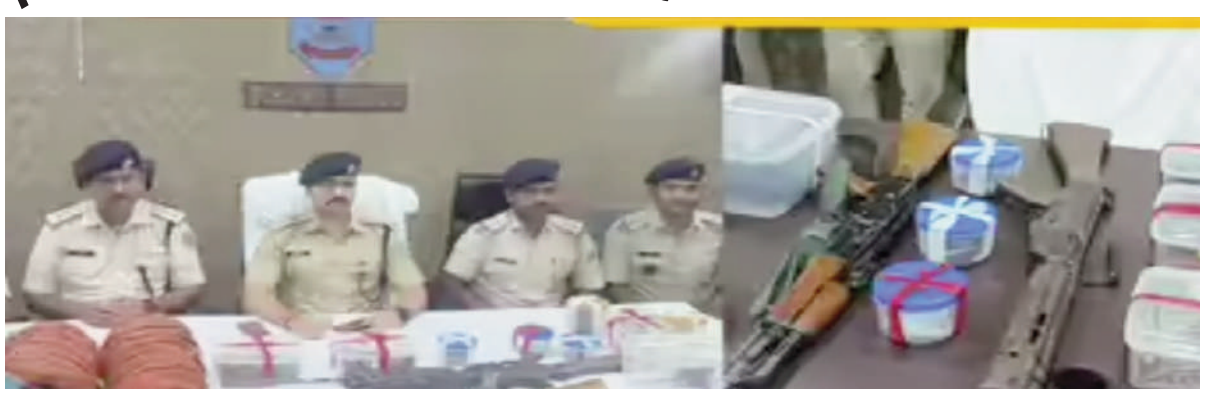

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, माओवादी प्रभावित झारखंड में हथियारों का बड़ा जखीरा बरामद हुआ है। यहां के माओवादी प्रभावित बिरहोड़ेरा जंगल में शनिवार को संयुक्त तलाशी अभियान के दौरान सुरक्षाबलों ने हथियार और गोला-बारूद का जखीरा बरामद किया। बोकारो जिला के जंगल से पुलिस को साईन्स रायफल एस एल आर जैसे हथियार बरामद हुई हैं ।

इस मामले की जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक हरविंदर सिंह ने बताया कि यह अभियान हाल में क्षेत्र में माओवादियों और सुरक्षाकर्मियों के बीच हुई मुठभेड़ के बाद शुरू की गई तलाशी प्रक्रिया का हिस्सा था।

एसपी के अनुसार, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) और जिला सशस्त्र पुलिस द्वारा चलाए गए अभियान के दौरान एक राइफल (एसएलआर), 20 कारतूस, एक इंसास राइफल की मैगजीन, एक एसएलआर मैगजीन, कोडेक्स वायर के दो बंडल और एक डेटोनेटर बरामद किया गया। गोमिया थाना क्षेत्र के तहत आने वाले बिरहोड़ेरा जंगल में बुधवार को हुई मुठभेड़ में दो माओवादी मारे गये थे और सीआरपीएफ एक जवान शहीद हो गया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023